गद्य -भाग

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

नवीन चन्द्र मिश्र

जन्म – 01.01.1933 ई0

जन्म स्थान – सौराठ, मधुबनी

वृत्ति – प्राध्यापक-सी0एम0 कॉलेज, प्राचार्य, सहरसा कॉलेज, विश्वविद्यालयै प्राचार्य ल0ना0 मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा।

कृति – अंकिया नाट विवेचन (1984 ई0), प्रतिपदा: एक अध्ययन। विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित निबन्ध आदि।

राष्ट्रीय एकताक प्रासंगिकता

राष्ट्रक सम्यक् विकास हेतु राष्ट्रीय ऐक्यक महत्ता स्वतः सिद्ध अछि। यावत पर्यन्त एक-एक व्यक्तिमे समष्टिक प्रति एकसूत्रताक भावक आविर्भाव नहि होएत तावत धरि राष्ट्रक कल्याणक परिकल्पने करब भ्रम होएत। राष्ट्रक सर्वांगीण विकासक हेतु लोकमे चेतना जागृत करए पड़तैक, लोकक मानसिकतामे परिवर्त्तन आनए पड़तैक। हाथ पर हाथ धऽ कऽ बैसने किंवा ककरो पैर खिचलासँ अभ्युन्नतिक मार्ग अवरुद्ध भए जाएत, जे लोक हितमे सर्वथा बाधक प्रमाणित होएत।

वर्त्तमान भारतमे एकताक प्रश्न अति जटिल भऽ गेल अछि। ई देश अत्यन्त विशाल अछि। एहिठाम अनेक प्रकारक संस्कृति, धर्म ओ जाति केर अस्तित्व भेटैछ। एतय भारत-भूमि पर कतोक बेरि विदेशीक आक्रमण भेल आ आक्रमणकारी लोकनि अपन-अपन प्रभाव छोड़ैत गेल, जे विभिन्न जाति-उपजातिकेँ प्रादुर्भूत कयलक।

ई पावन देश ऋषि-मुनिक देश रहल अछि, तपस्वी साधकक पुण्यभूमि रहल अछि, ज्ञानी-विज्ञानीक कर्मस्थली रहल अछि। आ ई लोकनि समय-समय पर आविर्भूत भऽ विविधतामे एकताक संदेश प्रदान करैत रहल छथि। जगतगुरु आदि शंकराचार्य द्वारा चारि गोट शक्तिपीठक स्थापना सम्पूर्ण देशकेँ भावात्मक ऐक्य-सूत्रमे आबद्ध करबाक स्तुत्य प्रयत्न छल।

परंच देश मध्य विघटनकारी तत्त्वक इतिहास अति पुरातन थीक। एतय कतिपय छोट-छोट नृपति छलाह जे सर्वदा परस्पर साधारणो विषय पर प्रतिष्ठा-मर्यादाक मिथ्या भावना हृदय-प्रदेशमे राखि युद्ध करबा पर तुलल रहैत छलाह, जकर अनुचित लाभ विदेशी आक्रमणकारी लैत रहल। अत्यल्प सैनिकक साहाय्यें मोगल भारत पर अपन आधिपत्य स्थापित कऽ लेलक। देशी नरेश लोकनि आपसमे लड़िते रहलाह। एतबे नहि, अपितु एहीमे सँ किछु देशद्रोही सेहो भेलाह जे विदेशीकेँ अपन राजकोष किंवा सैनिकसँ सहायता पर्यन्त प्रदान कएल जे वस्तुतः घृणास्पद विषय रहल। जखन अंग्रेज द्वारा भारत पर आक्रमण ओ आधिपत्यक प्रयास भेलैक तँ सिराजुद्दौला प्रतिरोधक झंडा हाथमे थम्हलनि परंच हुनक सेनापति मीरजाफर हिनका धोखा दऽ देलक आ सत्ता हस्तगत करबाक प्रलोभनसँ प्रेरित भए अंग्रेजक मदति कयलक। यद्यपि अंग्रेज ओकरो मुँहेँ भरे खसौलक, कतहु के नहि रहऽ देलक। आपसी ऐक्यक अभावमे भारतीय जनता मुँहेँ तकैत रहल आ अंग्रेज आधिपत्य स्थापित करबामे पूर्णतः सफल भए गेल। अंग्रेजसँ लोहा लेबाक प्रयास कतेको खेप भेल। झाँसीक रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, बाबू वीर कुंवर सिंह आदि सदृश योद्धा रणभूमिमे उतरि अपन-अपन साहस ओ वीरताक परिचय बलिदानसँ देलनि, जकर इतिहास साक्षी अछि। मुदा, हिनका लोकनिक संग पुरनिहार विशेष लोक रहनि नहि, तँ प्रयास सराहनीय रहितहु तात्कालिक निष्फल रहलनि, परंच एकर दूरगामी प्रभाव भारतीय पर दृष्टिगत होइछ।

भारतीय स्वतंत्रता-प्राप्तिक निमित्त सर्वश्रेष्ठ प्रयोजनक अनुभव भेलैक 'राष्ट्रीय एकता'क। मुदा, एकर सर्वथा अभाव रहने सम्पूर्ण विद्रोह अबल भऽ ध्वस्त भऽ गेलैक। अन्ततोगत्वा जखन अंग्रेजक निष्ठुरतापूर्ण व्यवहार भारतीयक

ति उभरलैक, तखन राष्ट्रीय स्तर पर भारतीयोमे एकताक भावना प्रस्फुटित भेल। ओना मुस्लिम लीग अपनहि क्षुद्र म्प्रदायवादक कारणेँ देशकेँ विभक्त कऽ देलक, जे दुनू देशक हेतु विनाशकारी रहल। तथापि राष्ट्रीय एकताक कुरनसँ देश स्वतंत्र भऽ कऽ रहल।

15 अगस्त 1947 ई0 मे भारत स्वाधीन भेल। लेकिन भाषावाद, सम्प्रदायवाद एवं क्षेत्रवाद अपन भार ठौलक। भाषाक मामला अति तन्नुक होइत छैक। तेँ स्वार्थान्ध नेतागण राजनीतिक मंच पर भाषाकेँ अस्त्र बनाए एकर भ्युत्थानक प्रश्न जनताक समक्ष उठाए जनता ओ सरकारक मध्य प्रत्यक्ष टकराव करएबामे हास्यास्पद योगदान दैत रल छथि। एतबे नहि, राजनीतिक गोरखधंधा वला व्यक्तिक द्वारा पड़ोसी राज्यक भाषाक संग सेहो तनावक स्थितिक न्म भेल। भाषाक आधार पर राज्यक निर्माणक स्वर देशक कोन-कोनसँ गुँजित होमए लागल। हैदराबादसँ आन्ध्र थक् भेल। बम्बइ दू खंडमे विभक्त भेल-महाराष्ट्र ओ गुजरात। पंजाबसँ हरियाणा हटल। पुनः कतिपय मुद्दा लए एहि भ राज्यमे परस्पर टकराव केर स्थितिमे दिनानुदिन अभिवृद्धि होइत गेल। एकर ज्वलन्त उदाहरण पंजाब थीक। आइ रखंड-आन्दोलन सेहो चरमसीमा पर इहो पृथक झारखंड-राज्यक मांग राष्ट्रीय स्तर पर भऽ रहल अछि, आ एहि रूपेँ शमे अन्तर्विवादक कारणेँ एकताक कमी देखबामे अबैछ, जकर अन्तर्राष्ट्रीय प्रभाव होइछ। एहि कमजोरीक लाभ देशी सहजतापूर्वक उठबैत अछि। कश्मीर समस्या एखन धरि बनले अछि। असमक समस्या आएल। ई सभ समस्या रतक रीढ़ तोड़ि चुकल छैक। एकर विकासमे अतिशय अवरोधक दैवालक रूपमे ई सभ समस्या ठाढ़ भेल श्न-चिह्न बनल छैक।

आब भाषाक रूपकेँ देखल जा सकैछ। राष्ट्रभाषाक रूपमे हिन्दीकेँ सुप्रतिष्ठित करबाक सत्प्रयास जे सरकार रा भेल तकर प्रबल विरोध दक्षिण द्वारा भेलैक। तमिलनाडुमे स्थिति तेहन भयंकर भऽ गेल जे एकरा भारत-संघसँ राक करबाक नारा प्रारंभ भऽ गेल। हिन्दी भाषी लोकनिक हत्या होमए लागल। पुनः ओकर प्रतिक्रियास्वरूप उत्तर रतमे तमिल भाषीक संग दुर्व्यवहार होमए लागल। सरकारकेँ दक्षिणक भावनाक रक्षार्थ संविधानमे आवश्यक शोधन पर्यन्त करए पड़लैक। राष्ट्रीय एकताक लेल राष्ट्रभाषाक अत्यधिक महत्ता छैक। ओ सभ राष्ट्रीय भाषाक मध्य म्पर्क-सूत्र स्थापित करैत अछि। संगहि सम्पूर्ण राष्ट्रक सामान्य भावनाकेँ अभिव्यक्ति दैत अछि। किन्तु, दुर्भाग्यवश न्दी राष्ट्रक एहि सेवासँ वंचित राखल गेल आ विदश। भाषा अंग्रेजी अपन अंग्रेजियत लए राष्ट्रक भाल पर चढ़ल रहि ल। भाषाक आधार पर राज्य-निर्माणक मांग एखनहुँ ठाम-ठामसँ भऽ रहल अछि, जे निस्सन्देह राष्ट्रक एकतामे धक बनल देशकेँ कमजोर करबाक दिशामे अपन निन्दनीय भागीदारी लैत देखल जा रहल अछि।

एकता एवं राष्ट्रीय शक्तिमे अकाट्य सम्बन्ध अछि। कोनो राष्ट्र तावत पर्यन्त परिपुष्ट नहि मानल जा सकैछ तावत धरि ओकर विविध अंगमे परस्पर ऐक्य-भाव नहि होइक। मनुष्य रूप, रंग, जाति-धर्म, भ्यता ओ स्वभावादिमे क दोसरासँ भिन्नता रखैत अछि; किन्तु व्यापक रूपेँ ओहि सभमे एक तरहक आभ्यन्तरिक एकता सन्निविष्ट रहैछ, जे

समान लक्ष्य दिशि प्रेरित करबामे एहि समस्त वैभिन्यकेँ गौण कऽ दैछ। इएह आभ्यन्तरिक एकता थीक एकात्मकता, जाहि पर राष्ट्रीय विकास आ सुरक्षा निर्भर करैत छैक।

भारतमे प्राचीन कालसँ अद्यपर्यन्तक विभिन्नतामे एकताक परिदर्शन होइछ, आ इएह एकर अपन खास वैशिष्ट्य थीक। हिमालयसँ लए कन्याकुमारी तक प्रसृत एहि पैघ देशमे जे विभिन्न प्रकारक जाति, धर्म, भाषा, आचार-व्यवहारादि दृष्टिपथ पर अबैछ से सभ मालामे ग्रथित बहुरंगी पुष्प सदृश अपन सौंदर्य वैशिष्ट्य ओ सुरभिक रक्षा करैत समष्टि रूपेँ भारतीय संस्कृतिकेँ अभिनव सौंदर्य ओ सुगंधि प्रदान करैत रहल अछि। राष्ट्रीयताक एक सूत्रमे आबद्ध एहि विविधतहिसँ भारतीय संस्कृतिक इन्द्रधनुषी मनोमुग्धकारी स्वरूपक सृष्टि भेल अछि। भारतक ई वैशिष्ट्य प्रायः अन्य कोनो देशमे नहि दृष्टिगोचर होइछ।

वैदिक कालहिसँ अद्यावधि भारतवर्षक सर्वदा आभ्यन्तरिक राष्ट्रीय ऐक्यक अनुभूति लैत रहल अछि। हमरा सभक पूर्वज परिकल्पना कएने रहथि-'संगच्छध्वं संवदध्वं संवो मनांसि जानताम्'। अर्थात् संग-संग चलु, संग-संग बाजू एवं सभक चित्त एक रहय, जकरा हमरा सभ आइ भावात्मक एकता कहैत छियैक तकर वास्तविक स्वरूप इएह छैक।

कैलाशसँ कन्याकुमारी तक समान महत्त्वक तीर्थक स्थापना कएनिहार हमरा सभक पूर्वज संभवतः ई उम्मीद कएने होएताह जे एहि सभ तीर्थक पर्यटनसँ देशाक लोकमे ई भावना जागृत रहतैक जे आहार-व्यवहार, भाषा, वेश-भूषा आदिमे भिन्नता रहितहु हमरा लोकनि एकहि गाछक शाखा छी, अर्थात् सभ एकहि छी।

आर्य धर्म केर परम्परागत भव्य भावना हमरा सबहिक पुरातन ग्रन्थादिमे विशद रूपेँ उपलब्ध अछि, जाहिमे राष्ट्रीय एकताक कतिपय प्रमाण भेटैत अछि। एहि देशक महापुरुष लोकनि द्वारा सृजित क्रमिक रूपेँ कोनो ग्रंथक पारायणसँ एहि प्रकारक राष्ट्रीय एकताक दृष्टान्त भेटैत अछि। कहबाक अभिप्राय ई जे, एतुका संस्कार एही प्रकारक वैचारिक-आदर्शसँ, परिवेष्टित-परिप्लावित अछि।

राष्ट्रीय संकटक क्षणमे भारतीय उच्चादर्शक उदाहरण महाभारतक निम्न श्लोकमे भेटैछ, जे निस्सन्देह प्रेरणास्पद थीक-

'वयं पंच वयं पंच, वयं पंच शतानिते
अन्यै महा विवादेतु स्वयं पंचाधिकशतम्।'

-एहिमे कौरवकेँ लक्ष्य करैत युधिष्ठिरक कहब छनि जे ओना तँ हमरा सभ पाँच भाइ छी आ कौरव लोकनि एक सय भाइ छथि। किन्तु, दोसरासँ विवाद भेला पर हमरा लोकनि एक सय पाँच भाइ छी। वाह्य संकटक आगमनसँ

ापसी अन्दरूनी समस्त भेदभावकेँ विस्मृत कऽ जाएब भारतक प्रमुख वैशिष्ट्य रहल अछि। इतिहास एहि तथ्यक ाक्षी अछि जे एहि आदर्शकेँ बिसरला उत्तर भारतवासी संकटमे समय-समय पर अबैत रहल अछि।

बीसम शताब्दीमे आबि भारतमे लोक-चेतना जाग्रत भेलैक। अंग्रेजक गुलामीक विरोधमे संघर्षरत रहबामे ष्ट्रीय एकताक स्वरूप उभरल, ओ एही कारणेँ स्वतंत्रताक दर्शनो लोककेँ भऽ सकलैक।

हमरा सभक शक्तिक प्रतीक थीक 'दुर्गासप्तशती'। ओकर मननसँ ई ज्ञात होइछ, जे जखन महिषासुरक त्याचार चरमोत्कर्ष पर पहुँचल तखन देवगण अपन ऐक्यक प्रतीक आदिशक्ति दुर्गाक आह्वान कएल। आइ जखन मरो सभक स्वतंत्रता, क्षेत्रीय अखंडता तथा जीवन-यापन पद्धति पर समस्या उत्पन्न भऽ गेल अछि तखन हमरा भक हेतु ई अत्यावश्यक अछि जे हमरा लोकनि राष्ट्रीय एकताक रूपमे आत्मशक्तिक प्रतिष्ठापना ओ संवर्द्धना करी। खने हमरा सभ 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः' क अपन सनातन लक्ष्य-पूर्त्तिमे सफल भऽ सकैत छी।

कहलो गेल अछि जे एकतामे बल अछि। एकतासँ जतए शक्ति-संचित होइत छैक; आत्म-बल बढ़ैत छैक, र्यादाक रक्षा होइत छैक, सांस्कृतिक उत्कर्षक मार्ग प्रशस्त होइत छैक ततहि विभाजन, ईर्ष्या, झगड़ा, राग ओ द्वेषसँ रित्रिक पतन होइत छैक, जकर प्रभाव नहि मात्र समाजक एक इकाई पर पड़ैछ, अपितु राष्ट्रव्यापी प्रभाव एकर पड़ैत क। सम्पूर्ण राष्ट्र सएह प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूपेँ अपन तंत्र-संचालन बाधित भए जाइछ, जकर लाभ अन्यान्य देश लेबए गैछ।

साम्प्रदायिकतासँ राष्ट्रीय एकता पर आघात पहुँचैत छैक। प्रायः प्रत्येक सम्प्रदायमे किछु व्यक्ति एहन होइत छि जे अपन स्वार्थ-सिद्धिक हेतु साम्प्रदायिक दंगा कराए दैत अछि। जन-समुदाय अर्थ-संकटक ज्वालामे जरैत, ीवनक अस्तव्यस्ततामे पिसाइत ओहि दिश ध्यानो नहि दैछ आ यावत ध्यान जाइतो छैक तावत धरि विपत्तिक पहाड़ ोकरा पर अभूतपूर्व ओ अप्रत्याशित रूपेँ टूटि चुकल रहैत छैक, जे ओकरा चकविदोर लगा दैछ। एहिसँ राष्ट्रीय एकता ंडित होइछ। राष्ट्रकेँ अपार क्षति एहिसँ पहुँचैत छैक।

समाजक एक इकाईसँ लए राष्ट्रक सम्पूर्ण जनसमूह पर्यन्त एक दोसराक संग शृंखलाबद्ध अछि, कड़ी रूपमे। भक कर्तव्य भए जाइछ राष्ट्रीय प्रगतिक प्रति कटिबद्ध ओ प्रतिबद्ध होएबाक। प्रत्येक व्यक्तिमे यदि एहि प्रकारक वनाक प्रादुर्भाव भऽ जाए तँ सकल कल्याण स्वयंसिद्ध अछि। किंतु, यदि एहिमे किओ दुर्भावना रूपी कालुष्य राखि ीवन-पथ पर रहल तँ एकताक राशि कमजोर भए जएतैक, फलतः राष्ट्रकेँ गर्तमे जाइत बिलम्ब नहि होएतैक आ सताक वएह रूप समक्ष झलकऽ लगतैक जे पूर्वमे मोगल ओ अंग्रेजक शासन-कालमे कहियो छल। अस्तु, राष्ट्रीय कता राष्ट्रहितमे सर्वथा प्रासंगिक थीक।

शब्दार्थ

जटिल-कठिन

सर्वांगीण-सभ तरहँ

बाधक-विघ्न पहुँचावय वला

अभ्युन्नति-विकास

स्तुत्य-प्रशंसनीय

ऐक्य-एकता

अबल-कमजोर

निष्फल-बेकार

निष्ठुरता-कठोरता

स्वार्थान्ध-स्वार्थ मे आन्हर होयब

अप्रत्याशित-जकर आशा नहि हो

दृष्टान्त-उदाहरण

पारायण-पूरा पाठ करब

पुरातन-प्राचीन, पुरान

प्रश्न ओ अभ्यास

1. लघूत्तरीय प्रश्न-

(i) राष्ट्रभाषाक रूपमे कोन भाषा प्रचलित अछि?

(ii) भाषाक आधार पर राज्यक निर्माण भेलासँ कोन तरहक हानि होयत?

(iii) मुस्लिम लीग कोन तरहँ भारतीय एकताकेँ प्रभावित कयलक?

(iv) हमरा लोकनिक बीच 'दुर्गासप्तशती' कोन तरहेँ ख्यात अछि?

(v) अंग्रेज बहुत कम सैन्य शक्तिसँ भारत पर राज्य कयलक तकर मूल कारण की छल?

(vi) राष्ट्रीय एकताक चर्चा कोन ग्रन्थमे भेटैत अछि?

(vii) कोनो दू योद्धाक नाम लिखू?

२. दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

(i) राष्ट्रीय एकताक की महत्त्व अछि?

(ii) राष्ट्रीय एकता कोन-कोन बात पर निर्भर करैत अछि?

(iii) भारतक राष्ट्रीय एकताक प्रमाण कोन ग्रंथसँ भेटैत अछि?

(iv) राष्ट्रीय एकताक हेतु भाषाक की योगदान होइछ?

(v) की साम्प्रदायिकता राष्ट्रीय एकतामे बाधक सिद्ध होइछ?

(vi) राष्ट्रीय एकतासँ की सभ लाभ होइत छैक?

३. भाषा अध्ययन

(i) सन्धि विच्छेद करू:

अभ्युन्नति, स्वार्थान्ध, हास्यास्पद, अद्यावधि, दुर्भावना।

(ii) विशेषण बनाउ :

राष्ट्र, एकता, देश, भारत, जाति।

(iii) निम्नलिखित शब्दक वाक्यमे प्रयोग करू :

पावन, अत्यल्प, परिकल्पना, लोकचेतना, अभिप्राय।

(iv) विपरीतार्थक शब्द लिखू :

तथ्य, एक, आहार, सार्थक, राजा।

योग्यता-विस्तार

1.अपना वर्गमे एहि निबंधक आधार पर वाद-विवाद प्रतियोगिता कराउ।

2.निबंध लेखकक विषयमे अपन शिक्षकसँ आओर जानकारी लिअ।

□□□

नरेन्द्र झा

जन्म - अनन्त चतुर्दशी-1934 ई०

जन्म स्थान - तरौनी, दरभंगा

वृत्ति - चार्टर्ड एकाउन्टेंट

कृति - मिथिलाक आर्थिक विकास-2000 ई०, मिथिलाक-जनपदीय विकास-2005 ई०, मिथिलामे जनसंसाधन ओ प्रबंधन-2006 ई०, विकास ओ अर्थतंत्र-2008 ई०, अर्थतंत्र ओ भ्रष्टाचार-2012 ई०, परिभ्रमण-2012 ई०। एकर अतिरिक्त मिथिला मिहिर, मिथिला दर्शन आदि पत्र-पत्रिकामे मिथिलाक उद्योग-धंधा आ अर्थव्यवस्थासँ संबंधित लेख।

□□□

मिथिलांचलक उत्थान

भारतवर्षक उत्तर-पूब भागमे 25,000 वर्गमील क्षेत्रफल ओ 4,39,71,581 (2001क जनगणना) जनसंख्या बला भूभाग मिथिला भूमिक उर्वरा शक्ति, वन, जल, पशु आदि धनमे तथा बुद्धिक तीव्रतामे ककरोसँ न्यून छि। एहि भूमिक उत्तरमे हिमालय, दक्षिणमे गंगानदी, पूरबमे महानन्दा आ पश्चिममे गंडक नदी अछि। हिमालय सँ गंगा धरि 100 मील ओ पूरब सँ पश्चिम धरि 2.50 मील। ई क्षेत्र 25.3 अंश अक्षांश सँ 27.5 अंश उत्तर अक्षांश धरि एवं 83.0 अंश सँ 88.80 अंश पूर्व देशांतर धरि व्याप्त अछि। सुगौली सन्धिक पूर्व समस्त भूभाग भारतक अधीन छल। शासनमे सुविधा ओ गोरखासँ झंझटिक कारण अंग्रेज सरकार पूरा तराई क्षेत्र 1816 मे गोरखा सरकारकेँ दय देलक। एखन पूर्वी चम्पारण, पश्चिमी चम्पारण, मुजफ्फरपुर; सीतामढ़ी, शिवहर, वैशाली, दरभंगा, मधुबनी, समस्तीपुर, बेगूसराय, किशनगंज, सुपौल, सहरसा, कटिहार, पूर्णिया, अररिया, खगड़िया, मधेपुरा जिला ओ नवगछिया-बीहपुर (उत्तरी भागलपुर), जे मात्र पुलिस जिला अछि, एकर अंग अछि। तराई क्षेत्रक मोरंग, सप्तरी, महोत्तरी, सरलाही, चौटहाट, बारा ओ परसा एहि सन्धिक बाद एकरा क्षेत्रमे नहि अछि। हिमालय संसारक सर्वोच्च पहाड़ एवं सुखकर खनिज द्रव्यक आगार अछि। गंडक ओ महानन्दा जल, पटौनी ओ विद्युतक भंडार अछि। एहिठामक श्रम, भूमि, पर्वत ओ नदीक समस्त उपयोग नहि भेल छैक। यदि तकर उपयोग हो त' कोन एहेन एहिक सुख छैक जाहिसँ हमरा सभ वंचित रहब। भूमिसँ भोजनक हेतु नाना प्रकारक अन्न, तरकारी ओ फल, पहिरय लेल वस्त्रक बांग; पहाड़सँ सड़क, बान्ह ओ मकान बनयबाक हेतु विभिन्न तरहक पाथर; वनसँ काठ ओ नदीसँ माछ तथा खेत पटयबाक लेल जल, पेयजल ओ उद्योग-धंधा, कल-कारखाना, रेलगाड़ी ओ अन्य यातायात आदिक हेतु बिजली अल्प आयासमे एहि अंचलमे संभव छैक। ने लोकक अभाव अछि, ने प्राकृतिक साधनक, अभाव अछि तँ मात्र सुव्यवस्थाक। एहि साधनक समुचित व्यवस्था कोना होयत एहि हेतु हमरा लोकनि कटिबद्ध भ' जाइ।

जनसंख्या कोनो भूभागक सम्पत्ति बुझल जाइछ। जनशक्ति राष्ट्रक पूंजीक द्योतक थिक। मिथिलांचलक जनसंख्यामे 1991क तुलनामे 2001 मे 28.43 प्रतिशत वृद्धि भेल छैक। आजुक सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक पुनर्निर्माणक कोनो योजनामे जनाधिक्य समस्या महत्त्वपूर्ण अछि। श्रम शक्तिक समुचित उपयोग नहि भेलासँ जे समस्या उत्पन्न भेल छल तकर निराकरण केन्द्र सरकार आ राज्य सरकार विभिन्न योजनाक अन्तर्गत कय रहल अछि।

मानव सभ्यताक विकासक आरम्भसँ कृषि विशाल जनसंख्याक जीविकाक साधन रहल अछि। वास्तवमे कृषि सभ उद्योगक जननी ओ मानव जीवनक पोषक थिक। कोनो अल्प विकसित भूभाग खाद्यान्नमे आत्मनिर्भरता प्राप्त कयने बिना अपन आर्थिक विकासक कल्पना नहि कय सकैछ। विश्व बैंकक एक रपटक अनुसार बिना कृषि विकासक आर्थिक विकास संभव नहि। मिथिलांचलमे तीन प्रकारक फसिल भदै, अगहनी ओ रब्बी होइछ। धानक खेती 52 प्रतिशत क्षेत्रमे एवं एक एकड़मे उत्पादन 1432 एलबी जे अमेरिकामे 2185 एलबी, चीनमे 2433 एलबी, जापानमे 3444 एलबी ओ इटलीमे 4565 एलबी। गहूमक उत्पादन प्रति एकड़ 625 एलबी जे चीनमे 989 एलबी

अमेरिकामे 1030 एलबी, जापानमे 1713 एलबी ओ मिस्रमे 1918 एलबी। अही गतिसँ अन्य जजाति उपजैत अछि। चायक खेती किशनगंजमे शुरू कयल गेल छैक। नारियल, केरा ओ अनानासक व्यावसायिक खेती आब आरम्भ भेल अछि। एहि अंचलक पछुआयल खेती ओ निम्न उत्पादकताक मुख्य कारण थिक प्राकृतिक प्रकोप, तकनीकी अभाव, आर्थिक ओ संस्थागत असहयोग। भूमि सुधार कानून सेहो असफल सिद्ध भेल। विपणन ओ भंडारणक समुचित व्यवस्थाक अभावक पूर्ति करबाक हेतु कोनो वस्तुक भंडारणक समस्याक समाधानक हेतु सरकार सन्नद्ध बुझि पड़ैछ।

प्राचीन कालमे ई भूभाग आर्थिक दृष्टिसँ स्वावलम्बी छल। प्रत्येक आवश्यक वस्तुक उत्पादन ओ निर्माण एतय होइत छल। समाजक ख़ास वर्ग उद्योग विशेषमे लागल छलाह। हुनकालोकनिक जीवन निर्वाहक वैह साधन छलनि। गृह उद्योग पूर्ण रूपसँ विकसित छल। किन्तु विदेशी शासन कालमे एहि उद्योगकेँ कोनो प्रोत्साहन ओ सुविधा नहि भेटलै। सभटा नष्ट भ' गेलैक। चीनी उद्योगक विकास 1932 मे प्रारम्भ भेल। 17 गोट मिल कार्यरत छल। एहि मिलक प्रतिस्थापन ओ आधुनिकीकरण नहि भ' सकल। सम्प्रति सभ बन्द भय गेल अछि वर्तमान सरकार तकरो सुढ़िऐबामे लागल अछि। 1955 मे आधुनिक ढंगक कागज मिल लगायल गेल जकर संख्या ग्यारह भ' गेल, सभ बन्द अछि। एतय जूटकेँ सोनाक रेशा, नामसँ जानल जाइछ। उन्नैसम शताब्दीक अन्तधरि किशनगंज जिलामे हाथ सँ बोरा बुनल जाइत छल। बादमे कटिहारमे आधुनिक जूट मिल बनल जे बन्द अछि। समस्तीपुरमे एक जूट मिल कार्यरत अछि। पटुआक उत्पादन अधिक होइछ जे कलकत्ताक जूट मिलमे जाइछ। एहि उद्योगक विकासक पूर्ण संभावना छैक। 1983मे सहकारिता क्षेत्रमे अत्याधुनिक सूत मिल कार्यरत छल। 1988मे राज्य वस्त्र निगम द्वारा इन्डस्ट्रीयल कॉटन यार्न' प्रोजेक्ट कार्यरत कयल गेल, सम्प्रति बन्द अछि। 1976मे दरभंगामे औद्योगिक क्षेत्र विकास प्राधिकारक स्थापना भेल। लघु उद्योग विकासक हेतु समस्त क्षेत्रमे औद्योगिक प्रांगण बनल। उद्यमीकेँ भूमि एवं भवन मुहैया कयल गेल। एहिना मुजफ्फरपुरक बेलामे उत्तर बिहार औद्योगिक विकास प्राधिकार बनल। हाजीपुरमे राज्य सरकार सेहो उद्योग लगौलक। मुदा सरकारक औद्योगिक नीतिक कारण औद्योगिक क्षेत्रमे आमूल परिवर्तन होयबाक संभावना अछि। वर्तमान सरकार औद्योगिक प्रगतिक लेल डेग उठा रहल अछि।

राष्ट्रक आर्थिक विकासमे यातायात साधनक विशेष महत्व अछि। मात्र आर्थिक नहि सामाजिक, सांस्कृतिक बौद्धिक दृष्टिकोणसँ एकर महत्व छैक। यदि कृषि एवं उद्योग राष्ट्ररूपी प्राणीक शरीर ओ हड्डी थिक त' यातायात ओकर जीवन तन्तु। एहि अंचलक विकासमे समुचित यातायात व्यवस्था नहि रहलासँ बड़ पैघ असौकर्य भ' रहल छल मुदा विगत एक दशकसँ मिथिलांचलक संग-संग बिहारक समस्याक समाधान करबाक हेतु नेशनल हाइवेज, स्वर्णिम चतुर्भुज योजना, इस्ट एण्ड वेस्ट कोरिडोर योजनाक अंतर्गत मिथिलांचलमे अनेक सड़कक निर्माण भय रहल अछि। प्रत्येक ग्रामकेँ सड़क द्वारा शहरसँ जोड़बाक योजना चलि रहल अछि।

एहिठाम ईशावस्योपनिषत् सहित शतपथ ब्राह्मण, अनेक श्रौत, गुह्य ओ धर्मसूत्र, स्मृति ओ पुराण, जर्मनीक पूर्व मीमांसा, ओ शबरक भाष्य, कपिलक सांख्य, गौतमक न्याय ओ कणादक वैशेषिक दर्शन, कुमारिलक वार्तिक ओ

टीका, वाचस्पतिक भामती, गंगेश-वर्द्धमान-पक्षधर-शंकर-वाचस्पतिक नव्यन्याय एवं अनेको विद्वानक काव्य, निबंध आदि सँ भरल-पुरल साहित्यिक जगत रहल अछि। बिहार सरकार शिक्षाक विकासक लेल प्रतिबद्ध अछि। शिक्षाक प्रति गरीब-गुरबाक ध्यान आकृष्ट करबाक हेतु अनेक प्रकारक योजना चला रहल अछि जेना-पोशाक योजना, साइकिल योजना, छात्रवृत्ति योजना, मध्याह्न भोजन आदि। गरीबक झोपड़ी धरि शिक्षाक दीप जड़य ताहि वास्ते आंगनबाड़ी योजना सेहो सरकार द्वारा चलाओल जा रहल अछि। 40 छात्र पर एक शिक्षकक नियोजन हेतु सरकार प्रयत्नशील अछि। एहि तरहे मिथिलांचल टामे नहि, सम्पूर्ण बिहारमे लाखो शिक्षकक नियोजन कएल जा रहल अछि।

जन स्वास्थ्य क्षेत्रमे प्रखण्ड स्तरसँ जिलास्तर धरि अस्पतालक सुदृढ़ीकरण कयल जा रहल अछि। जे अस्पताल मृतप्राय भऽ गेल छल ताहिमे संजीवनी आबि गेलैक। डाक्टर आ रोगीकेँ भेंट होइत छैक। दवाई भेटैत छैक। असाध्यसँ असाध्य रोगक निदानमे गरीबक सहायता देबाक लेल सरकारी सुविधा सेहो मुहैया कराओल जा रहल छैक।

मिथिलांचल सहित बिहारक विकास पटरी पर आबि रहल अछि। बिजलीमे जौँ पूर्ण सुधार भऽ जाइक तखन बिहारक किसान पंजाब जकाँ सुसम्पन्न भऽ जायत। ओना शिक्षा आ स्वास्थ्य जाहि तरहेँ समृद्धि पाबि रहल अछि, तँ ओ, दिन दूर नहि जे मिथिला पूर्वहि जकाँ श्री सम्पन्न भऽ जाय।

शब्दार्थ

आयास-प्रयास

जजाति-फसिल

असौकर्य-कठिनाई

कंगाल-अत्यन्त गरीब

प्रश्न ओ अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

(i) मानव सभ्यताक विकासक आरम्भसँ लोकक जीविकाक प्रमुख साधन रहल अछि-

(क) कृषि (ख) उद्योग (ग) नौकरी (घ) माछक व्यापार

(ii) मिथिलामे चीनी उद्योगक विकास प्रारम्भ भेल-

(क) 1932 ई० (ख) 1942 ई० (ग) 1950 ई० (घ) 2012 ई०

(iii) मिथिलामे आधुनिक ढंगक कागज मिल लगाओल गेल-

(क) 1955 ई०मे (ख) 1960 ई०मे (ग) 1972 ई०मे (घ) 1980 ई०मे

(iv) दरभंगामे औद्योगिक क्षेत्र विकास प्राधिकारक स्थापना भेल -

(क) 1976 (ख) 1990 (ग) 2000 (घ) 2013

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :-

(i) सुगौली सन्धिक पूर्व समस्त.....भारतक अधीन छल।

(ii) जनसंख्या कोनो भूभागक सम्पत्ति.....जाइछ।

(iii) राष्ट्रक आर्थिक विकासमे.....साधनक विशेष रहल अछि।

(iv) हमर प्राचीन बड्ड.....छल।

3. निम्नलिखित शब्दमे सँ सही शब्दमे सहीक (✓) आ अशुद्ध शब्दमे गलतक (X)चेन्ह लगाउ-

उजवन, अधोगति, सम्पती, समूचित, आर्थिक, जनशक्ति, याज्ञवल्क्य।

4. लघूत्तरीय प्रश्न-

(i) पाठक आधार पर मिथिलांचलक चौहद्दी लिखू।

(ii) 2001 मे मिथिलाक जनसंख्यामे कतेक प्रतिशत वृद्धि भेल?

(iii) मिथिलामे कतेक तरहक फसिल होइछ? किछु फसिलक नाम लिखू।

(iv) 1932 मे मिथिलामे कतेक गोट चीनी मिल कार्यरत छल?

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

(i) प्रारंभमे मिथिलामे कतेक तरहक मिल वा उद्योगक स्थापना भेल छल?

(ii) शिक्षाक क्षेत्रमे मिथिलाक प्राचीन काल केहन छल? वर्णन करू।

6. पाठमे आयल संज्ञा शब्द चुनि कऽ लिखू।

7. गतिविधि-

(i) मिथिलाक आर्थिक उन्नतिक लेल की सब आवश्यक अछि?

(ii) अहाँ अपन गामक आर्थिक उन्नतिक लेल की सब आवश्यक कार्य बुझैत छी।

दिशा निर्देश

1. शिक्षकसँ आग्रह जे मिथिलाक आर्थिक उन्नति लेल की आवश्यक कार्य अछि? छात्रकेँ विस्तारसँ बुझाबथि।

□□□

देवकान्त झा

जन्म - 1936 ई0

जन्म स्थान - चतरा, मधुबनी

वृत्ति - प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष-संस्कृत विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, मैथिली अकादेमी, पटना, निदेशक सह सचिव -1987-89 ई0, पटना। साहित्य अकादेमी, दिल्लीक एडवाइजरी कमिटीक सदस्य (मैथिली) 1993-1997 ई0।

कृति - विभिन्न पत्र-पत्रिकामे कथा, कविता, निबंध ओ समीक्षा मूलक रचना प्रकाशित, मैथिली दस रूपक, कथा कल्प (मैथिलीमे) महाकवि कालिदास आओर भवभूतिक आलोचनात्मक अध्ययन हिन्दीमे, ए हिस्ट्री ऑफ मोडर्न मैथिली लिटरेचर अंग्रेजीमे।

पुरस्कार - नलिन विलोचन शर्मा पुरस्कारसँ पुरस्कृत-1988-89 ई0।

□□□

मिथिलाक रंग ओ शिल्प

कला मानव-जीवनक जीवित दस्तावेज थिक। कोनो देशक सभ्यता-संस्कृतिक आत्मा ओकर कलाकृतिएमे प्रतिध्वनित होइत अछि। कला द्विविध होइछ-ललित कला ओ उपयोगी कला। ललित कला पाँच वर्गक अछि-स्थापत्य, मूर्ति, चित्र, संगीत ओ काव्य। कलाक कुल चौंसठि भेदमे सँ ललित कला सर्वोपरि थिक। ललित कलाक संवर्गमे साहित्य आओर संगीतक पश्चात् दोसर नम्बरपर मूर्ति ओ चित्रेक स्थान अछि। चित्र जीवनक मूक कविता थिक आ कविता जिनगीक बजैत चित्र। नाटकमे ओ चित्र बजबे नहि, चलबो-फिरबो करैत अछि। तैं नाटककेँ कवित्वक चरमसीमा कहल गेल अछि-नाटकान्तं कवित्वम्। साहित्य आ संगीतसँ रहित व्यक्ति जड़मति थिक। महाकवि भर्तृहरिक दृष्टिमे साहित्य, संगीत आ कलासँ शून्य मनुक्ख एहन आँखिदेखार पशु थिक, जकरा खाली नाङरि आ सींगटा नहि रहैत छैक। पशुक अहोभाग्य जे मानव घास नहि खाइत अछि, ने तँ पशुकेँ घास कहाँसँ भेटितैक-''साहित्य सङ्गीतकलाविहीनः साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः''। जिनगी जीवाक एक कला थिक। कला-जगत् जिनगीकेँ सरस, सुखद ओ आनन्दप्रद बनबैत अछि। कलाक-संसारक सर्वस्व थिक मनुष्य-दुःख दैन्य, अभाव आ पीड़ासँ लड़ैत यैह हाड़-काठक मनुक्ख जकरा प्रकृति आ परमेश्वरसँ जोड़ि कलाकार आनन्दक अमृत पिया देबाक लेल अपस्याँत रहैत अछि। तैं कलाक दुनियाक केन्द्र आ परिधि मनुष्ये आ मानव-जीवन थिक। कला जीवनक सहज अनुकृति थिक, ओकर सजीव चित्रांकन आ विशिष्ट रागात्मक अभिव्यञ्जना थिक। ओकर पुनर्प्रस्तुति आ पुनर्निर्माण थिक। तैं कोनो समाज वा राष्ट्रक सहज प्राणधारा आ जीवन-शैली एतय देखल जा सकैए। कोनो देशक कलाकृतिकेँ देखि ओहि देशकेँ सहजहि चिन्हल-परेखल जा सकैए। मिथिलाक शिल्प ओ चित्रक संसार मिथिलाक कथा कहैत अछि। मिथिलाक चित्रशैली मिथिलाक वास्तविक जीवन-शैली थिक। ई सप्राण कलाकृति मिथिलाक स्पन्दनशील जन-जीवनक मूक कविता थिक। एहिमे जे देश-कोशक राग-रंग आ माटि-पानिक महँ-महाइत सौरभ अछि सएह हमर परिचय थिक।

मिथिला भारतक सांस्कृतिक आत्मा थिक। युग-युगसँ ई धर्म, दर्शन ओ अध्यात्मक त्रिवेणी रहल अछि। ई सनातनिसँ संस्कृत विद्याक गढ़ रहल अछि। भारतीय संस्कृतिक शुद्ध स्वरूप एतय सुरक्षित रहल अछि। कोनो मिश्रण वा प्रदूषणक शिकार मिथिला कहियो ने रहल। तैं एकर सुच्चा रूप एतुका कलाकृतिमे देखल जा सकैए। परम्परा आ संस्कृतिक मधुरतम सामंजस्य मिथिलाक शिल्पकला ओ चित्रकलामे द्रष्टव्य थिक। ललितकला कोनो देशक सांस्कृतिक सम्पदाक सनातन धरोहरि थिक। बीसम शताब्दीक छठम-सातम दशक मिथिलाक शिल्पकला ओ चित्रकलाक इतिहासक स्वर्ण-युग रहल अछि जखन एकरा सर्वप्रथम व्यापक अन्तर्राष्ट्रीय मञ्च भेटलैक। सौंसे संसारमे ई क्रांति मचा देलक। मिथिलाक महान सपूत स्वर्गीय ललित नारायण मिश्र आ स्वनामधन्य मिथिलाक वरद पुत्र उपेन्द्र महारथीक योगदान एहि क्षेत्रमे अविस्मरणीय अछि। महान कलामर्मज्ञ डब्ल्यू. जी. आर्चर 'मैथिली चित्रकला' (Maithili Painting)' नामक पोथी लिखि पहिले-पहिल एहि कलाकेँ सार्वभौम मान्यता दियौलनि। पुनः 1982 ई.मे 'मधुबनी पेंटिंग आ 1987 इसवीमे मैथिलीमे 'मिथिलाक शिल्पकला ओ चित्रकला' लिखि स्व. डा. उपेन्द्र ठाकुर एहि

क्षेत्रमे उल्लेखनीय काज कयल। जन्मजात अन्वेषक आ कलामर्मज्ञ स्वर्गीय कुलकर्णी एहि कलाक प्रति अपन सम्पूर्ण जीवन समर्पित कय देलनि। महाराष्ट्री रहितो ओ मिथिलाक अनुपम रत्न छलाह। सुप्रसिद्ध राजनेता ललित बाबूक संरक्षण, फ्रांसीसी महिला ग्रए मेकुआदक कलाप्रेम, महान् पुपुल जयकर, राजीव सेठी, जगदीशचन्द्र माथुर आदिक नाम स्वर्णाक्षरमे लिखल जायत जनिक अथक प्रयासेँ मिथिलांचल आइ संसारक कलाकृति मंचपर प्रतिष्ठापित अछि। सरिपों धर्म-दर्शन आ अध्यात्मे नहि, मिथिला साहित्य-संगीत ओ कलाक पावन त्रिवेणीधाम रहल अछि।

'स्वान्तः सुखाय' अथवा 'कला कलाक लेल' (Art for art' Sake) तँ कलाकारक परम सुखधाम थिके; मुदा मिथिलाक शिल्पकलामे जीवनक यथार्थ प्रतिबिम्बन, आनन्द ओ विनोदक अतिरिक्त सेवा-समर्पण एवं आर्थिक उपयोगिताक सृजनक भाव सेहो निहित अछि। अर्थशास्त्रक शब्दावलीमे यदि उत्पादन उपयोगिताक सृजन थिक तँ मैथिल चित्रशिल्प एक सहज-सुन्दर निदर्शन-प्रदर्शन। गृह उद्योग रूपमे विकसित आइ ई कृषिक क्षेत्रमे पसरल बेकारीक समस्याक यथेष्ट समाधान प्रस्तुत कय सकैत अछि। संगहि दलाली-दादागिरी ओ माइनजन-मझौलियाक शोषणक चक्कों तरसँ निकालि मिथिलाक माटि पानिपर जमल कलाकेँ समुचित प्रोत्साहन आ बाजार भेटलैक तँ संरक्षणक अन्तर्गत ई हमर विदेशी मुद्राक अभिवृद्धिमे समर्थ योगदान कय सकैत अछि। मिथिलाक आजुक जीवित संदर्भमे शिल्पकला ओ चित्रकलाक महत्त्व राष्ट्रीय वा अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिजपर सर्वाधिक अछि। यदि लोक जागरूक रहि अपन एहि प्राचीन सम्पदाकेँ जोगाकेँ राखय तँ मिथिला गृह उद्योग आ वैश्विक पर्यटन केन्द्रक रूपमे विकसित कयल जा सकैए।

आधुनिक चित्रकलाक संसारमे मिथिला चित्रकलाक धूम मचल अछि। फैशनक दुनियामे सेहो एकर बाजार गरम अछि। कीमती-सँ-कीमती साड़ीक शोभामे आइ मिथिलाक अरिपन चारि चान लगा रहल अछि। संसारक कपड़ाक वेशकीमती डिजाइनमे मिथिलाक चित्रकलाक चमत्कार देखिते बनैछ। जे विशेष पावनि-तिहार वा पूजा-अर्चामे पहिने मिथिलाक घर-आंगनक सिंगार छल से आइ संसारक शोभा अछि। अजन्ताक सप्राण चित्र ओ एलोराक बजैत मूर्ति जहिना विश्वक तीर्थयात्रीकेँ अभिभूत करैत आयल तहिना मिथिलाक घर-आंगन, देवाल, तुलसी चौड़ा, कोहबर वा कोबराक घर आदिमे हाथसँ बनाओल गेल चित्र, माटिक भाँति-भाँतिक मूर्ति, सूइ-डोराक राशि-राशिक चमत्कार, सिकी-पौतीक अपूर्व कलाकारिता आदि देशी-विदेशी पर्यटकक ध्यान आकृष्ट कए रहल अछि। विभिन्न पावनि-तिहार, अनेको संस्कार (बिआह, उपनयन, मुण्डन आदि), देवी-देवताक पूजा अर्चना गोसाउनिक घरसँ सलहेसक मन्दिर धरि ओ कुम्हारक चाकसँ डोम-डोमनिक पथिया-मौनी आ सूप-चालनि धरि एकर व्यापकता देखल जा सकैए। ओना मिथिलांचलक कर्ण कायस्थ ओ ब्राह्मण वर्णमे मिथिलाक शिल्पकला ओ चित्रकला विशेष रूपसँ सुरक्षित रहल अछि। आजुक संसारक नीक-सँ-नीक होटल-रेस्तराँ, सामुद्रिक बन्दरगाह, शिक्षण संस्था विश्वविद्यालय, बाबू-भैयाक ड्राइंग रूम, रेलक डिब्बा, प्लैटफॉरम, टीशन आदिपर मिथिलाक एहि कलाकृतिकेँ देखि हमरालोकनि सहसा आनन्दमुग्ध भय जाइत छी। मिथिलाक विशिष्ट चित्र ऐपन वा अरिपनमे तन्त्र-मन्त्रक चमत्कार ओ रहस्यवादी दार्शनिक ऊहापोहक शैली सेहो सन्निहित अछि। कतेको मैथिलानी आइ राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार

बहुश: सम्मानित भय चुकली अछि। पद्मश्रीसँ पुरस्कृत जगदम्बा देवी, आ गंगा देवी तथा राष्ट्रपति एवं अन्यान्य पुरस्कारसँ पुरस्कृत महासुन्दरी देवी, सीता देवी, गोदावरी देवी, चन्द्रकला देवी, यमुना देवी, बाना देवी आदि नाम स्वर्णाक्षरमे उल्लेखनीय थिक। आजुक मिथिलाकेँ तेँ मर्यादा अपन एहि गृहकलासँ भेटलैक अछि से युग-युगधरि हमरालोकनिकेँ गौरवान्वित करैत रहत। सरिपों ई लोकनि मिथिलाक पिकासो थिकीह। एहन अपन स्त्रीरत्नसँ मिथिला आइ धन्य अछि।

जँ मधुबनी राँटी, रसीदपुर, जितबारपुर, भवानीपुर, हरिनगर, लहेरीगंज आदि चारूकातक क्षेत्र एहि कलाक प्रमुख प्रसवभूमि रहल अछि तँ ई मधुबनी चित्रकलाक (Madhubani Paintings) नामसँ जानल जाइत अछि। आइ एहि कलाकेँ संसारक ततेकने प्रशस्तिक फुलडाली भेटलैक अछि जे विश्वक मानचित्र पर मधुबनी सदा-सर्वदाक लेल अमर बनि गेल। एहि चित्रकलाक तीन भाग अछि-भित्तिचित्र (Wall Paintings), पटचित्र (Canvas Paintings) ओ भूमिचित्र (Floor Drowings)। मिथिलामे भित्तिचित्र आ भूमिचित्रक प्राधान्य अछि। पीढ़ी-दर-पीढ़ीसँ परम्परागतरूपसँ मैथिल ललना एकरा जोगओने छथि। कोबरक घर एहि कलाक सबसँ पैघ आकर्षण थिक। कोहबर वा कोबर लिखबामे मैथिलानीक भावप्रवणता, अनुभूतिमयता आ कल्पनाशीलता देखितै बनैछ। प्रेम, सौन्दर्य ओ आनन्दमय उल्लासक ई रंग ओ शिल्प अपूर्व अछि। भूमिचित्र, भूमिशोभा व अरिपनमे मिथिलाक तन्त्र-मन्त्रक बहुविध आयाम, रहस्यमयता, धार्मिक प्रतीकात्मकता, देवी-देवताक उपासना-प्रक्रिया आदिक चमत्कार अछि। चकमक चाउरक पिठार आ रंगीन भस्म, सिन्दूर आदिसँ मैथिल ललनाक आडुरक ई कौशल अपूर्व अछि। मिथिलाक धार्मिक-सांस्कृतिक ई परम्परा बहुत अर्थगर्भित ओ महिमामण्डित अछि। मृण्मूर्ति (माटिक मुरत), गुड़िया (कनिआ-पुतड़ा) श्यामा-चकेबा आदि एकर व्यावहारिक रूप थिक। व्यावहारिक आ उपयोगी कलाक रूपमे सिकी, बाँस, सूत, काठ, मूँज, मोथा, लाह, टकुरी,-चरखा आदिक रूप मिथिलामे बहुत विकसित अछि। गृह-उद्योगक रूपमे यथोचित संरक्षण पोषण भेने कृषि-क्षेत्रमे पसरल बेकारीक भूतकेँ ई आसानीसँ भगा सकैए। बिचौलिया जे चानी कटैत अछि तकरा सरकारी प्रयाससँ दूर कयल जा सकैए।

दरबारी संस्कृतिसँ भिन्न जनजीवनक प्रतिनिधि मिथिलाक ई लोक-कला वा गृह-कला अमर थिक। मिथिलाक सामाजिक, धार्मिक आ सांस्कृतिक सम्पदाक एहि सनातन धरोहरिकेँ जाहि निष्ठा आ समर्पणक संग मिथिलाक अशिक्षित वा अर्धशिक्षित महिलागण बिना कोनो शिक्षण-प्रशिक्षणकेँ युग-युगसँ संजोगने रहलीह अछि। तकर जतेक बड़ाई कयल जाय, थोड़ थिक। रंग ओ शिल्प, कूची ओ कलम, शास्त्र ओ साहित्य, धर्म ओ दर्शन, तन्त्र ओ मन्त्र, रेखा ओ वर्ण-विलास, प्रकृति ओ परमेश्वर तथा कोबरक घरसँ गोसाउनिक मन्दिरधरि पसरल मधुबनी चित्रकला आइ ग्रह नक्षत्र जकाँ भूमण्डलक कण्ठहार अछि। जाधरि मैथिल संस्कृति जीवित रहत ताधरि एहि चारूचन्द्रक चन्द्रकलासँ नटनागरक ई संसार जगमग रहत। राष्ट्रीय अस्मिताक आधार, विश्वामित्रक सिंगार, गौरवक आगार, ओ विदेशी मुद्राक भण्डार मिथिलाक ई रंग-शिल्पक संसार युग-युग जीवओ आ जन-मानसकेँ जुड़ाबओ।

शब्दार्थ

द्विविध-दू प्रकारक

मूक-बौक

अपस्यांत-बेचैन, बेहाल

सनातनि-शाश्वत जे सबदिन रहय

दैन्य-दीनता, गरीबी

कलामर्मज्ञ-कला जननिहार

जन्मजात-जन्मसँ

कण्ठहार-गरदनिक हार

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

(i) साहित्य-संगीत कलासँ रहित के थिक?

(क) दमवता (ख) दनुज (ग) मानव (घ) पशु

(ii)कोन मैथिल ललना पद्मश्री पौलनि?

(क) सुनयना (ख) शोभना (ग) मीनाक्षी (घ) जगदम्बा

(iii) मैथिलीक पोथी 'मिथिलाक शिल्पकला ओ चित्रकला' के लिखलनि :

(क) भास्कर कुलकर्णी (ख) राधाकृष्ण चौधरी (ग) उपेन्द्र ठाकुर (घ) पुपुल जयकर

(iv) डब्ल्यू॰ जी॰ आर्चरक पोथी कोन थिक?

(क) मधुबनी पेन्टिंग (ख) मैथिल पेन्टिंग (ग) मिथिला पेन्टिंग (घ) तिरहुत आर्ट्स

(v) ललित कलाक कतेक भेद अछि?

(क) तीन (ख) पाँच (ग) सात (घ) नौ

(vi) 'स्वान्तःसुखाय' केर अर्थ थिक?

(क) स्वार्थ-साधन (ख) परार्थ-सिद्धि (ग) अपन हृदयक सुख लेल (घ) लोक-कल्याण लेल

2. लघूत्तरीय प्रश्न-

(i) डॉ॰ उपेन्द्र ठाकुरक कोन रचना अछि?

(ii) जगदम्बा देवी कोन तरहेँ ख्यात छथि?

(iii) कोहबर आ गोसाउनिकघरक अन्तर चारि वाक्य लिखू।

(iv) भूमि चित्र कोन अवसर पर लिखल जाइछ?

3. दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

(i) 'मिथिलाक रंग ओ शिल्प' निबन्धक सारांश लिखू?

(ii) मिथिलाक शिल्प ओ कलाक की विशेषता अछि? बुझा कऽ लिखू।

(iii) "मिथिला कला-कौशलक गढ़ थिक-" कोना? स्पष्ट करू।

(iv) मधुबनी पेंटिंगक प्रचार-प्रसारक लेले ललित बाबूक भूमिका लिखू।

4. भाषा-अध्ययन

(i)वाक्य प्रयोग द्वारा अर्थ स्पष्ट करू :

पिठार, नाङरि, सौंसे, आँखिदेखार, ऐपन, संजोगब, मह-मही, जाधरि-ताधरि, साक्षात् ।

(ii)अर्थ-भेद देखाउ :

राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय; सदा-सर्वदा; शिक्षण-प्रशिक्षण; निर्माण-पुनर्निमाण; प्रस्तुति-पुनर्प्रस्तुति; मूक-वाचाल, गाम-घर।

(iii)अधोलिखित सहचर शब्दक वाक्यमे-प्रयोग करू :

देश-कोश, माटि-पानि, घर-आङन, हाड़-काठ, दुःख-दैन्य, रग-रंग, पावनि-तिहार, पूजा-अर्चा।

(iv)निम्नलिखित शब्दक विशेषण बनाउ :

विश्व, जीवन, सुरभि, राष्ट्र, महत्, धर्म, समाज।

(v)वाक्यमे प्रयोग करू :

धूम मचब, चानी काटब, बेकारीक भूत भगायब, जोगाकेँ राखब।

□□□

भाग्यनारायण झा

म - 12 जनवरी 1939

स्थान - ग्राम+पोस्ट-कारज (दरभंगा)

ति - पत्रकारिता,दिसम्बर 1960 ई0 सँ मई 2012 धरि आर्यावर्त, 'हिन्दुस्तान' आ 'दैनिक जागरण' मे क्रमश: कार्यरत। 'मिथिला मिहिर' (पटना) आ हिन्दी साप्ताहिक 'दिनमान' (नयी दिल्ली) मे क्रमश: समीक्षक आ अंशकालीन संवाददाता।

ति - मैथिली सामाजिक नाटक 'मनोरथ' (1965) एकांकी संग्रह 'सोनक ममता' (1970) आ विदेश यात्रा वृतांत 'परदेस' (2007)।

माजिक कार्य - सामाजिक साहित्यिक आ सांस्कृतिक संस्था चेतना समिति सँ 1961 सँ जुड़ल। 1967-68 मे समितिक संयुक्त सचिव। 1977 सँ 79 धरि प्रचार सचिव। बिहार श्रमजीवी पत्रकार यूनियनक कोषाध्यक्ष कतेको वर्ष।

मान - पुरस्कार : चेतना समितिसँ चेतना-सेवी सम्मान (2010), राष्ट्रीय स्तरक संस्था विश्व संवाद केन्द्र (पटना) सँ 2013 मे देशरत्न डा. राजेन्द्र प्रसाद पत्रकारिता शिखर सम्मान।

□□□

वैश्वीकरण आ अर्थव्यवस्था

वैश्वीकरण आ भूमंडलीकरण दुनू शब्द एक दोसरक पर्याय अछि। 1970 क दशकक बीचमे विश्वमे एक नव तरहक, धनी आ सम्पन्न राष्ट्र वर्चस्वकेँ सुदृढ़ रहयवला अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाक शुरुआत भेल। एहि नव व्यवस्थाक मुख्य मुद्दा छल मुक्त, नियंत्रणहीन व्यापार, मुद्रा ओ पूंजी बाजार पर सँ सभ नियंत्रणक समाप्ति। प्रत्यक्ष टैक्समे कटौती, राज्य व्ययमे कमी तथा राज्य द्वारा लागू कयल आर्थिक नियंत्रणक समाप्ति, सार्वजनिक उद्योगक निजीकरण, बहुदेशीय कम्पनी तथा निजी उद्गमक विश्व अर्थव्यवस्थाक मंच पर राजकीय नियंत्रणसँ मुक्ति। एकर अतिरिक्त काफी समयसँ चलि रहल श्रमिक वर्ग तथा मध्यम वर्गक कल्याणक लेल आंशिक समता मूलक रुझान। राष्ट्रीय सीमाकेँ आर्थिक मामलामे समाप्त करबाक एक नव तरीका प्रारम्भ भेल। एहि नव व्यवस्थाकेँ भूमंडलीकरण नाम देल गेल। एहि नीतिगत परिवर्तनक उद्देश्य रहैक मूल्यक सही निर्धारण आ बाजारक मूल्यक परिवर्तन या संशोधनक आधार पर आर्थिक निर्णय, जे कि अनुकूलतम आ विवेकसम्मत होइक।

एहि भूमंडलीकरणकेँ संभव करऽमे आधुनिक तकनीकी प्रगतिकेँ पैघ भूमिका रहल अछि। भूमंडलीकरणक समर्थक लोकनिक कहब छनि जे वैश्वीकरण-भूमंडलीकरणक कारण विश्वक बाजार आपसमे जुड़ि गेल अछि। पारस्परिक समन्वय भ' रहल अछि। मुद्रा, एकर विरोधमे कहल जाइत अछि जे जँ ई कथन सही होइत तँ विश्वक वस्तुक मूल्यमे एक समान होयबाक प्रवृति पाओल जाइत। तँ भूमंडलीकरणकेँ गैर समतापूर्ण सेहो कहल जाइत अछि। भूमंडलीकरणसँ विश्व-स्तरीय आर्थिक संपर्क आ लेन-देन बढ़ल अछि। विश्व उत्पादन दरसँ बेसी दर पर विश्व व्यापार बढ़ि रहल अछि। एकरे कहल जाइत छैक विश्व व्यापारमे चमत्कारिक परिवर्तन। कतेको लाख लोग प्रतिदिन राष्ट्रीय सीमा पार क' अन्तर्राष्ट्रीय यात्रा करैत छथि। विदेशी मुद्राक लेन-देन बढ़ल अछि। भूमंडलीकरणक प्रक्रिया 1990क बाद भारतक परिभाषा सनक बनि गेल अछि। आयात आ निर्यात दुनू सरकारी नियंत्रणसँ मुक्त क' देल गेल अछि।

'वैश्वीकरणकेँ' आधुनिक युगक विशेषता कहल जाइत अछि। सभ तरहक बातकेँ लोक भूमंडलीकरणसँ जोड़िकऽ देखैत अछि। कहल जाइत अछि जे वैश्वीकरणक रथक गति नहि रुकि सकैत अछि आ ने एकर कोनो विकल्प देखऽ मे अबैत अछि। संगहि, वैश्वीकरणकेँ एतेक सकारात्मक, शुभ आ वांछनीय बूझल जाइत अछि जे राजनीतिक, सामाजिक आ आर्थिक नीतिकेँ भूमंडलीकरणक समर्थनमे रखबाक पक्षमे छथि। एकर अनवरत प्रक्रियाक विरोधमे दकियानूसी, प्रतिगामी आ संकीर्ण मानसिकताक प्रतीक कहल जाइछ। एकरा अर्थात् भूमंडलीकरणकेँ विश्वशांतिक गारंटीक रूपमे प्रस्तुत कयल जाइत अछि।

औद्योगीकरण, पूंजीवाद, ज्ञान-विज्ञान आ शिक्षा-संस्कृतिक व्यापक प्रसार, समाजक नाम पर कयल गेल किछु प्रयोग आ लोकतंत्रीय राज्य-व्यवस्थाक अन्तर्गत विश्वक कायाकल्प भ' गेल। भूमंडलीकरण एहि प्रक्रियाक अत्याधुनिकतम चरण मानल जाइत अछि। आधुनिक काल कँ पहिने कहल जाइत छल जे मनुष्य कूपमंडकीय जीवन

बैत रहय। ओकर संसार बहुत सीमित छल। जँ कोनो दोसर देश, ओतुक्काक महाप्रतापी सम्राट या कोनो पैघ घटना थवा कोनो देशक वैभव आदिक जानकारी देर-सबेर पहुंचैत छल तँ लोककेँ ओहि पर विश्वास झट दऽ नहि होइत लैक।

भूमंडलीकरण, आधुनिकता आ विश्वव्यापी विकास उपर्युक्त दृष्टिकोणक अन्तर्गत करीब-करीब समानार्थ नल जाइत अछि। विश्वव्यापी पूंजीवादी तथा एकर समर्थक भूमंडलीयता विचारधारा आ नीत समूहकेँ ंडलीकरणक नामक पाछां ई उद्देश्य छलनि जे सरल, सुगम, सुहावना आ कर्णप्रिय शब्द अछि। संसारक ूयोगपति, व्यवसायी, वित्तीय क्षेत्रमे नियंत्रक, चिकित्सक, वैज्ञानिक, इंजीनियर, वित्तीय परामर्शी, राजनीतिज्ञ, ोरंजनक जगतक सितारा, खिलाड़ी, गायक, अभिनेता, बहुराष्ट्रीय कम्पनी सभक शीर्षस्थ पदाधिकारी जे वीकरणसँ आनन्द उठा रहल छथि से राजा-महाराजा सभकेँ सेहो दुर्लभ रहनि। जँ विश्वकेँ सम्प्रति छोट सन गांव ल जाइत छैक तँ सूचना, संचार आ यातायातक साधनक विकास आ ओकर सुलभता महत्वपूर्ण मानल जाइत अछि।

1990क उपरांत वैश्वीकरणक प्रक्रिया भारतक नीतिक परिभाषा सन बनि गेल अछि। एहि नीतिसँ विदेशी म्पनी आ व्यवसायी वर्गकेँ काफी लाभ भेलनि अछि। वास्तविक भूमंडलीकरणक शक्ति 60 हजारस बेसी बहुराष्ट्रीय थवा राष्ट्रीय कम्पनी अछि। विश्वक रंगमंच पर एकर काफी धाक एवं दबदबा अछि। वस्तुतः, हुनका लोकनिक र्गत कम्पनी सभक आचार-व्यवहार राष्ट्रक सीमासँ ऊपर उठि गेल सन देखऽ-सुनऽ मे लगैत अछि।

एक दिस भूमंडलीकरणसँ भारतमे सेहो चमत्कारिक सामाजिक परिवर्तन, सुख-सुविधामे बढ़ोतरी आर्थिक आ पारिक क्रांति आयल अछि तँ दोसर दिस शिक्षाकेँ भूमण्डलीकरणसँ जोड़बाक एहन कुचक्र आ साजिश कयल गेल छि, जाहि सँ देव-भाषा संस्कृतक उपेक्षा होयब स्वाभाविक। भारतक केन्द्रीय विद्यालय संस्थान आ जर्मनीक गोथे स्थानक बीच एकटा समझौता भेल अछि जे भारतक साढ़े तीन सौ केन्द्रीय विद्यालयमे विद्यार्थीकेँ विकल्प रहतैक ओ जर्मन पढ़य या संस्कृत। एहि योजनाक मूल उद्देश्य ई छैक जे जर्मन भाषा 2017 धरि एक हजार सँ बेसी स्कूल पढ़ाओल जाइक। विद्यार्थीकेँ जर्मन भाषा छठासँ बारहवीं कक्षा धरि पढ़ाओल जयबाक व्यवस्था कयल गेल अछि। द्यार्थी एवं शिक्षक लोकनिकेँ ई प्रलोभन देल गेलनि अछि जे संस्कृत शिक्षक छात्र कें संस्कृतक स्थान पर जर्मन ा पढ़ोताह, हुनका लोकनिकेँ जर्मनीक यात्रा सेहो कराओल जयतनि। जर्मनीक मुख्य उद्देश्य ई छैक जे भारतक नकार पेशेवरकेँ नौकरी दियनि, किएकतँ जर्मनीमे नकनीकी जानकारक अभाव रहैत छैक। जर्मनी प्रशिक्षु लोकक ा ब्रिटेन, फ्रांस, स्पेन, ग्रीस आ थाइलैंड सँ लैत अछि। तँ जर्मनी भारतक प्रशिक्षित आ बेरोजगार लोकक फौजसँ भान्वित होमऽ चाहैत अछि। चिन्तनीय बात तँ ई अछि जे जर्मनीक भाषासँ संबंधित कुचक्र आ षड्यंत्रक भागीदार न देशक साढ़े तीन सौ केन्द्रीय विद्यालय बनि गेल अछि, किएक तँ भारतमे करीब बीस हजार छात्र देव-भाषा कृतक स्थान पर जर्मन भाषा पढ़बाक लेल विवश कयल जा रहल छथि। जर्मनीक अभीष्ट छैक जे भारतमे बीस ार छात्रकेँ जर्मन सिखाओल जाय। संस्कृत सन प्राचीन देव-भाषाकेँ जीवंत राखक लेल बुद्धिजीवीवर्गकेँ जागरूक ए पड़तैक।

शब्दार्थ

पर्याय-एकक बदला दोसर

सुदृढ़-मजगूत

मुक्त-जकरा पर कोनो तरहक दबदबा नहि। स्वतंत्र

नीतिगत-नीतिसँ संबंधित

आयात-दोसर देशसँ आनब

निर्यात- अपना देशसँ बाहर पठाएब

अनवर-एहिखन, लगातार

दकियानूसी-पुरान पंथी, कट्टरपंथी

कूपमंडकीय-संकीर्ण, बहुत छोट

वैभव-धन, सम्पति

शीर्षस्थ-उच्च

प्रश्न ओ अभ्यास

1. लघुत्तरीय प्रश्न-

(i) भूमंडलीकरणक की अभिप्राय थिक?

(ii) राष्ट्रीय एकताक प्रमाण कोन ग्रंथसँ भेटैत अछि?

(iii) भूमंडलीकरणकेँ संभव करबामे कोन वस्तुक प्रगतिक पैघ भूमिका रहल?

(iv) विश्वशांतिक गारंटीक रूपमे ककरा प्रस्तुत कएल जाइत अछि?

(v) भूमंडलीकरणसँ कोन भाषाक उपेक्षा भेल?

(vi) विदेशी मुद्राक भंडार कोना बढ़ैत अछि?

(vii) विश्व व्यापारमे चमत्कारिक परिवर्तनक की अभिप्राय?

(viii) भूमंडलीकरणकेँ गैर समतामूलक किएक कहल जाइछ?

(ix) आयात-निर्यात सरकारी नियंत्रणसँ कहियासँ मुक्त अछि?

दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

(i) भूमंडलीकरणक वैशिष्ट्य लिखू।

(ii) भारतक केन्द्रीय विद्यालय संस्थान आ जर्मनीक संस्थानक बीच की समझौता भेल?

व्याकरण

(i) निम्नलिखित शब्दसँ विशेषण बनाऊ-

राष्ट्र, आधुनिक, कूपमंडक, व्यवसाय, चमत्कार, केन्द्र, अर्थ, राजनीति, समाज, परस्पर

(ii) विपरीतार्थक शब्द लिखू-

आयात, परोक्ष, सरल, सुगम, छोट

शिक्षकसँ-

1. शिक्षकसँ आग्रह जे भूमंडलीकरण शब्दसँ छात्रकेँ अवगत करावथि।
2. आयात-निर्यात ककरा कहल जाइछ? एहिसँ भारतकेँ कोन तरहेँ नफा-नुकसान होइत छैक,ताहिसँ छात्रकेँ परिचय करावथि।

□□□

वासुकीनाथ झा

जन्म	–	10 जुलाई 1940
जन्म स्थान	–	ग्राम+पोस्ट-पटसा, जिला-समस्तीपुर
शिक्षा	–	एम०ए०,पी०-एच०डी०
वृत्ति	–	सन् 1963सँ व्याख्याता, दुमका (झारखंड), सन् 1964सँ 1965, रोसड़ा कालेज, रोसड़ा, सन् 1965सँ कालेज ऑफ कामर्स पटना, रीडर-1980सँ 1896 ई०, वि०वि० प्रोफेसर-1986सँ 1988 ई०, विश्व विद्यालय सेवा आयोग द्वारा मगध विश्वविद्यालयमे प्रधानाचार्य नियुक्त-सन् 1988 ई०, प्रधानाचार्य पदसँ सेवा निवृत्त सन्-2000 ई०।
कृति	–	1. विद्यापति काव्यालोचन (शास्त्रीय समालोचना) अनुशीलन अवबोध (शोध एवं ऐतिहासिक समायोजन) परिवह-(आधुनिक समालोचना) लगभग 20 पुस्तकक सम्पादन, मैथिली त्रैमासिक पत्रिका घर-बाहरक सम्पादन सन् 2004सँ।
पुरस्कार	–	बिहार सरकार, राजभाषा विभाग द्वारा सन् 1988 मे प्रियर्सन पुरस्कार।
सम्मान	–	मिथिला विभूति सम्मान (विद्यापति सेवा संस्थान-दरभंगा), ताम्र पत्र सम्मान (चेतना समिति, पटना), रमानाथ झा सम्मान (साहित्यकार संसद) आदि, प्रसिद्ध शिक्षाविद्, चर्चित समाजिक कार्यकर्ता।

□□□

मिथिलाक प्राचीनता : वर्तमान अस्मिता

भारतीय उप-महाद्वीपमे अति प्राचीन कालसँ मिथिलाक अस्तित्व विद्यमान रहल अछि-सर्वस्वीकृत एवं लेख्य रहल अछि। समय-समय पर यद्यपि अनेक नामे ख्यात होइत रहल अछि तथापि राजनीतिक दुष्चक्रक पश्चातो ावधि अपन विद्यमानता स्थापित कएने अछि। ज्ञान-उपासना ओ चिन्तनक परम्परामे जनक, याज्ञवल्क्य, गौतम, श, मण्डन, वाचस्पति, उदयन आदि द्वारा विद्या ओ जीवनक गूढ़ रहस्यकेँ जनजन तक पहुँचाओल जाइत रहल। तीय दर्शनक भंडारकेँ भरबामे प्रचुर योगदान करैत रहल अछि। एहि प्रकारेँ पक्षधर, गोवर्द्धन, ज्योतिरीश्वर, ापति, गोविन्द दास, उमापति, लोचन, मनबोध, चन्दा झा, यात्री, मधुप, सुमन, लोकनिक काव्य सर्जना ओ विविध रक रचना होइत रहल अछि। एतबे नहि, लोरिक, दुलरा दयाल, दीनाभद्री, नैका-बनिजारा, सलहेस आदि नायक पराक्रम ओ लोकभावनाक समादर सर्वत्र विद्यमान अछि।

प्राचीनताक दृष्टिसँ वैदिक युगमे सेहो मिथिलाक विद्यमानता दृष्टिगोचर होइत अछि। ऋग्वेदक मंत्र किंवा ादिमे हो वा नहि उपनिषद ओ पुराणमे तँ अनेक स्थल पर एकर स्पष्ट उल्लेख भेटैत अछि। वृहद् विष्णुपुराणमे तँ बारह नामक गौरवबोधक उल्लेख अछि।

एहि पुराणमे तँ पृथक रूपसँ मिथिला खण्डक अध्याय बनाओल गेल अछि जाहिमे निमि, मिथि आ मिथिला क उत्पति कथाक विस्तृत विवरण अछि। एहि सँ मिथिलाक प्राचीनता ओ स्वीकार्यता, विशेषता एवं महत्ता सिद्ध अछि। एहूमे एहि ठामक लोकक ज्ञानशील होएब, दयालुता ओ उदारताक हेतु स्थानकेँ कृपापीठ, मंगलकारी, र्षक आदि विशेषणसँ युक्त कहब तत्कालीन आर्य समाजमे एकर श्रेष्ठत्व सिद्ध करैत अछि। मिथिला, तीरभुक्ति, , नैमिकानन, सहित अन्य नाम भौगोलिक, क्षेत्रीय, माटिक वैशिष्ट्य, प्राकृतिक सौन्दर्य, आध्यात्मिक व्यवहार क द्योतन करैत अछि। एहि बारहोमे सँ विदेह, तीरभुक्ति एवं मिथिला विशेष प्रसिद्ध अछि। एकर सभक आधारो णिके अछि। 'वैदेह' नामक प्रसंग तत्कालीन परम्पराक अनुसार राजाक गोत्र नामक आधार पर जनक नाम 'विदेह' ेल-'विदेहानां जनपदो वैदेह:'। एकर उल्लेख वेदमे सेहो भेल अछि।

तिरहुत-ई शब्द तीरभुक्ति शब्दक तद्भव रूप थिक। एहि संबंधमे मिथिलामे एक श्लोक प्रचलित अछि-

जाता सा यत्र सीता सरिदमलजला वाग्वती यत्र पुण्या
यत्रास्ते सन्निधाने सुरनगर नदी भैरवोयत्र लिङ्गम्।
भोमांसा न्याय वेदाध्ययन पटुतरैः पण्डितैर्मण्डिता या
भूदेवोयत्र भूप यजन वसुमती सास्ति मे तीरभुक्तिः॥

नदी, तपोवन, काननसँ युक्त अर्थात् भरल रहबाक कारणेँ तीरभुक्ति; कौशिकी, गंगा एवं कोशी सीमा रहलासँ क्ति; तीनू वेदसँ आहुति देनिहार ब्रह्मज्ञानी सभक निवास स्थान रहलासँ 'त्रिराहुति' अर्थात् तीरभुक्ति।

इतिहासकार लोकनिक मतेँ गुप्तकालमे मिथिला तीरभुक्ति नामे प्रसिद्ध छल एहिसँ पूर्व विदेह ओ मिथिला नामसँ। एतबे नहि, देवी भागवतमे सेहो मैथिल ओ मिथिलाक चर्चा अछि-

एतेवै मैथिला प्रोक्ता आत्मविद्या विशारदाः

योगेश्वर प्रसादेन द्वन्द्वैकत्वाभि जायते।

एहूमे एहिठाम लोककेँ आत्मविद्या विशारद कहल गेल अछि। हँ, 'तीरभुक्ति'क प्रसंग ध्यातव्य जे गुप्त शासनकालमे 'भुक्ति' शब्द प्रान्त अथवा प्रशासनिक प्रक्षेत्रक सूचक छल एवं 'तीर' नदीतटक बोधक छल जे भौगोलिक स्थितिक सूचक थिक।

वैदिक कालेसँ स्वतंत्र सत्ताक रूपमे प्रतिष्ठित 'विदेह' ओ लिच्छवि-वज्जिसंघकेँ गुप्त साम्राज्य अपनामे आत्मसात् कए लेलक। नवीन नामकरण कयलक 'तीरभुक्ति' जकर उल्लेख पुरुषोत्तमदेव अपन कृति 'त्रिकाण्डशेष' मे कयलनि अछि। 'त्रिकाण्डशेष' ओ प्रदेश मानल गेल अछि जे तीन प्रसिद्ध नदी गंगा, गंडकी आ कोशीक तट पर पसरल अछि। तीरभुक्तिक महिमा वर्णन एहि प्रकारेँ भेल अछि-

मीमांसा न्याय वेदाध्ययन पटुतरैः पण्डितैर्मण्डिताया।

भूदेवो यत्र भूपो यजन वसुमती सास्तिमे तीरभुक्तिः।।

मिथिलाक ऐतिहासिक वैशिष्ट्यक वर्णन करैत-स्टीवेंसन मूर कहने छथि-The history of Mithila does not centre round violent feats of arms but round courts engrossed in the luxurious enjoyment of literature and learning. But while Mithilas fame does not rest on heroic deeds, it must be duly honoured as the house where the enlighted and learned might always find a generous partron, peace and safety.

प्राचीनतम प्रमाण सभसँ पुष्ट होइत अछि जे मिथिला दीर्घकाल धरि वैदिक ओ उपनिषद विद्याक केन्द्र छल। राजा सभक दरबारमे तँ ज्ञानक ज्योति जरितहिँ छल, समाजक निम्नो वर्गमे लोक उच्च श्रेणीक विचारक ओ ज्ञानी होइत छल। उदाहरणार्थ महाभारतक वन पर्वमे मिथिलाक धर्मव्याधक तथा पतिव्रता साध्वीक कथा प्रस्तुत अछि। एहि ज्ञान गरिमा ओ वैचारिक स्तरीयताक कारणेँ 'याज्ञवल्क्यस्मृति' मे धर्म संबंधी निर्णय मिथिलाक सामान्य व्यवहारमे देखबाक निर्देश अछि-धर्मस्य निर्णयो ज्ञेयो मिथिला व्यवहारतः।

भारतीय दर्शनक मुख्य शाखा वा प्रकार मानल जाइत अछि। एहि छओमे सँ चारिटाक स्थापना मिथिलामे भेल अछि। कालक्रमानुसार 1000 ई. पू. सँ 600 ई. पू. क बीच मिथिलामे क्रमशः न्याय दर्शनक प्रणेता गौतम, वैशेषिक दर्शनक प्रणेता कणाद, मीमांसा दर्शनक प्रणेता जैमिनि एवं सांख्य दर्शनक प्रणेता कपिल एही प्रक्षेत्रक विभूति मानल जाइत छथि। भारतीय दर्शनक ई चारू दर्शनशाखाक प्रस्थान बिन्दु मिथिले रहल आ तँ एकर वैदुष्य समस्त भारतीय

चिन्तनकेँ प्रेरित आ प्रभावित करैत रहल। ईशापूर्व दशम् शताब्दीसँ छठम शताब्दी धरि भारतीय वैदिक विचारधारा एवं मिथिलाक वैदुष्य प्रभावक स्वर्णकाल रहल।

ई॰ पू॰ छठम शताब्दीसँ तेसर शताब्दी ई.पू. धरि मिथिलाक वैशाली अंचल बौद्धमतक केन्द्र बनल। बौद्धमतक प्रभाव विस्तारसँ निरीश्वरवादक दिसि उन्मुखता तथा अशिक्षित ओ निम्नवर्गीय लोकक झुकावसँ वैदिक मतक पुनरस्थापनक आवश्यकता अनुभव कएल गेल। एही परिप्रेक्ष्यमे मिथिलांचल पुनः नव स्फूर्तिसँ ठाढ़ भेल। कुमारिल भट्ट, उदयनाचार्य आदि विद्वान पुनःवैदिक विचारधाराकेँ स्थापित कएलनि। इएह विचारधारा मिथिलामे दीर्घकाल धरि प्रचलित रहल। कोनो वैचारिक ओ सैद्धान्तिक परम्परा जखन दीर्घकाल व्यापी होइत अछि तँ ओहिमे व्यावहारिक स्तर पर किछु रूढ़ि, किछु कट्टरता, कौलिक वा जन्मजात प्रभाव आदि अनेक कमजोरी दुर्गुणक समावेश स्वाभाविक रूपसँ होइतैछि अछि आ से मिथिलामे, मिथिलाक व्यवहार विशेषतः कर्मकाण्डमे सेहो भेल।

मिथिलामे नव्य न्याय, पूर्व मीमांसा एवं स्मृति निबन्ध ग्रन्थक प्रचुर रचना मध्ययुगमेँ भेल अछि। तकर सामाजिक-राजनैतिक पृष्ठभूमि छल। तेँ मध्ययुगमे एतेक स्मृति ग्रन्थक प्रचुरता दृष्टिगोचर होइछ। मिथिला प्राचीनकालसँ अबैत अपन प्रगाढ़ विद्या-परम्पराकेँ सावधानीपूर्वक रक्षा करबामे तत्पर रहल। एही तत्परताक उदाहरण अछि-'शरयन्त्र' अथवा 'शलाका परीक्षा'। ई एकटा प्रथा बनि गेल जाहिसँ अध्ययन ओ शास्त्र चिन्तन प्रथाक रूपमे प्रचलित रहल। एकरे अन्तर्गत उपाध्याय, महोपाध्याय एवं महामहोपाध्याय कहेबाक कठोर परम्परा चलल। एकर विस्तृत चर्चा महामहोपाध्याय डा. सर गंगानाथ झा आर्या सप्तशतीक विशेष संस्करणक प्राक्कथनमे केने छथि। परम्परागत विद्वाक अनुशीलनसँ ओकर व्यवहारिक अनुपालनक परिणामस्वरूप मिथिलाक जनजीवन पर स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होइछ। डा. जयकान्त मिश्र जर्नल ऑफ बिहार रिसर्च सोसाइटीक खण्ड-33मे प्रकाशित अपन 'सम आस्पेक्ट्स ऑफ मैथिल कल्चर' नामक आलेखमे मिथिलाक अनेक स्थान सभक नाम संस्कृत विद्वाक अध्ययनक स्मरण करबैत अछि। मिथिला मिहिरक 1935क मिथिलांकमे तँ एतेक धरि कहल गेल जे एहि ठामक खेलकूद धरिमे वेदान्तक शिक्षाक समावेश अछि। ऐतिहासिक दृष्टिसँ मिथिला सहित सम्पूर्ण भारतवर्षमे प्राचीन कालसँ अबैत 'अर्थशास्त्र' तथा 'दण्ड नीति'क परम्परा एगारहम शताब्दी धरि क्षीण होमए लागल। एहने स्थितिमे ऊपर चर्चित धर्मशास्त्र ओ कर्मकाण्डक वर्चस्व बढ़ए लागल। राजतंत्र विषयक विवेचन सेहो आब धर्मशास्त्रेक आधार पर प्रारंभ भेल। एगारहम शताब्दीमे भारत आएल विदेशी पर्यटक अलबरुनी सेहो एहि संक्रमणकालीन सामाजिक-राजनीतिक परिस्थिति एवं उद्भूत विचार-व्यवहारक चर्चा केने छथि।

चौदहम शताब्दीमे चण्डेश्वर ठाकुर जे स्वयं प्रख्यात विद्वान राजपुरुष छलाह, 'राजनीति रत्नाकर' मे राज्य संचालनक नव व्यवस्था तथा नव कर्त्तव्यबोध स्थापित करबाक चेष्टा केलनि अछि। ओ कहलनि-राजा वैह जे प्रजाक रक्षा करथि। कोनो जाति-वर्णक भए सकैछ।

मिथिलामे जाति-वर्णक कट्टरताक असरि सामान्य जन पर सेहो पड़ल। फलतः विभिन्न जातिवर्णक लोकमे अपन प्रधान बनेबाक प्रक्रिया सेहो प्रारंभ भेल। विभिन्न लोकगाथामे जाहि नायक सभक वीरगाथा अछि से अधिकांश विभिन्न ब्राह्मणेतर जातिक अगुआक रूपमे मिथिलाक विभिन्न क्षेत्रमे सक्रिय रहलाह। डा. हेतुकर झा मिथिलाक अपन समाजशास्त्रीय अध्ययन संबंधी एक आलेखमे चर्चा केलनि अछि जे गढ़सभक अवशेष विभिन्न जाति वर्णक प्रधान लोकनि मिथिलामे भेटैत अछि यथा-परगनाहाटी तथा परगना जरैलमे राजा कटेश्वरीक गढ़, परगना चखनीमे राजा गंधकेर गढ़ीक अवशेष, परगना हावीमे दुसाध राजाक गढ़क खंडहर आदि। मिथिला-तत्व विमर्शमे सेहो एहन अनेक गढ़-गढ़की अवशेषक चर्चा अछि। अस्तु।

भारतीय दर्शनक अन्तिम मौलिक कृति-'तत्व चिन्तामणि' मे गंगेश उपाध्याय (चौदहम शताब्दी) अनेक पक्षकेँ उजागर केने छथि। सामाजिक चिन्तनकेँ नव दिशाबोध देने छथि। एहि पुस्तकक विषयसँ कालक्रमे मिथिले नहि सम्पूर्ण देशक बौद्धिक जगत आन्दोलित भेल।

एही शताब्दीमे महाकवि विद्यापतिक आविर्भाव राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक ओ साहित्यिक क्षेत्रमे विशेष प्रभाव स्थापित केलक। विद्यापति अपन 'पुरुष परीक्षा' मे नीति शास्त्र, शस्त्र, विविध व्यावहारिक पक्षादिक उदारतापूर्वक चर्चा केलनि अछि। विद्यापति हिन्दूधर्मक व्याख्या जाति-वर्गसँ ऊपर उठि क' केलनि। सभकेँ अपन कुलपरम्पराक निर्वाहक प्रेरणा देलनि, सामान्य सामाजिक धर्मक अनुपालनक संदेश देलनि। भाषाक संबंधमे सेहो-'सक्कय वानी बहुअ न भावए' कहि 'देसिल बअना सवजन मिट्ठा' क समादर केलनि जाहिसँ ओ अमरता पाबि अद्यावधि प्रेरणा-पुरुष बनल छथि।

तत्पश्चात् टीकाकार युग आएल। गुरु-शिष्यक बीच लिखित वाद-विवादक परम्परा चलल। एहि सँ अत्यन्त महत्वपूर्ण, स्वस्थ एवं सजीव-सक्रिय बौद्धिक वातावरणक सृजन भेल। सतरहम शताब्दी अबैत-अबैत इहो परम्परा विलीन भए गेल। मिथिलाक बौद्धिक गरिमाक तेज क्षीण भए गेल। जाहि मिथिलामे पहिने शताधिक मीमांसक छलाह उन्नैसम शताब्दीक अन्तधरि मात्र तीन टा देखल जा सकैछ।

ओना गंगेश, वर्धमान, अयाची आदिक परिचयमे ओहि समयक लेखादिमे मैथिल अस्मिताक चर्चा अछि जातिवादी आ वर्णवादी भावना नहि अछि। कोनो समयमे अपनाओल गेल सामाजिक परम्पराक रक्षात्मक दृष्टिसँ धर्मशास्त्री चिन्तन आब अठारहम शताब्दी अबैत-अबैत अपनहिमे जाति-वर्णक, विशेषतः जातिगत व्यवहारक आन्तरिक विभेदक कारण बनि गेल। मिथिलामे ई सामाजिक व्यवहारक विभेद सांस्कृतिक चेतनाक व्यापकता ओ अस्मिताबोधक सूत्रकेँ सेहो प्रभावित केलक अछि। धार्मिक चिन्तन ओ जीवनक दृष्टिसँ मिथिलामे कहियो साम्प्रदायिकता नहि रहल। कोनो पन्थ वा सम्प्रदाय मिथिलामे आधिपत्य नहि जमा सकल। सामान्यतः एतए चारू वर्णमे वर्णाश्रम धर्मक अनुपालन, सभ देवी-देवताक प्रति भक्ति ओ श्रद्धा रहल अछि। ब्रह्मा, विष्णु, महेश, त्रिदेवक आराधना, शक्तिक उपासनास्वरूप भगवतीक अर्चना समान रूपसँ होइत रहल। प्रत्येक घरमे गोसाउनिक स्थापना,

प्रत्येक गाममे गहवर आदि लोकदेवताक स्थापना ओ आराधना निर्बाध ओ सहज रूपेँ चलैत रहल अछि। हँ, एतए सहज रूपेँ शिवाराधनाक प्रचलन व्यापक रूपेँ रहल अछि तँ 'महेशवानी' ओ 'नचारी' विशेष प्रिय रहल अछि सामान्य जनक मनोभावनाक अनुकूलताक कारणेँ। शक्तिक प्रति लगाव तँ एही बात सँ स्पष्ट अछि जे प्रत्येक शुभ कार्यक प्रारंभ 'गोसाउनिक गीते' सँ होइत अछि। मुसलमानक आगम ओ एतय निवसित भेलाक पश्चात् मिथिलांचलमे दुनू समुदायक बीच सौहादपूर्ण व्यवहार रहल अछि। एतेक धरि जे अनेक धार्मिक आयोजनो मे दुनूक सहभागिता देखल जाइछ।

बारहम तेरहम शताब्दीसँ पञ्जी प्रबन्धक प्रभाव समाजक ब्राह्मण ओ कायस्थ जातिक पूर्ण रूपेँ विद्यमान रहल। प्रारंभमे तँ ई सामाजिक जीवनकेँ नियंत्रित करबामे सहायक भेल किन्तु पश्चात् कृत्रिम रूपेँ उच्च-निम्न श्रेणीक अवधारणा सामाजिक विभेदक कारण बनल। पुनः एहू श्रेणी संबंधी निर्णयक अधिकार जखन राजसत्तामे चल गेल तँ एकरा तोड़बाक प्रक्रिया ओ क्रम तीव्रतर भए गेल जे आई अपन अनेक लघुसीमाक कारणेँ महत्वहीन भए गेल अछि।

मिथिलामे संगीत प्रियताक कारणेँ संगीतप्रेमक विद्यमानता सदैव परिलक्षित रहल अछि। चर्यागीतसँ लए, (बारहम शताब्दीक) महाराज नान्यदेव द्वारा रचित ग्रंथ सरस्वती हृदयालंकार हार, गीत गोविन्द, वर्णरत्नाकरमे संगीत-राग आदिक चर्चा, जगद्धरक संगीत सर्वस्व, लोचनक रागतरंगिणी आदिक संगीत विषयक सैद्धान्तिक ओ व्यावहारिक ग्रन्थक रचना लोकक अभिरुचि प्रदर्शित करैत छथि। तँ संगीतप्रियता हमर सांस्कृतिक चेतनाक अभिन्न अंग कहल जा सकैछ। तहिना नाटकक प्रति सेहो विशेष अभिरुचि रहल अछि। विभिन्न प्रकारक लोकनाट्यक समाजमे प्रचलन ई सिद्ध करैछ जे सामान्यजन, जे कलाक विशेषज्ञ-मर्मज्ञ नहि अछि तकरो एकरा प्रति प्रेम रहलैक। मिथिला ओ मैथिलीक समस्त मध्यकालकेँ नेपालीय नाटक, कीर्तनिया नाटक ओ अंकीया नाट, नाटके युग कहल गेल अछि। जे परम्परा अद्यावधि न्यूनाधिक रूपमे विद्यमान अछि।

आतिथ्य ओ स्वाभिमान हमरा सभक परिचिति रहल अछि। आतिथ्य ओ भोजनप्रियताक प्रमाण ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकरमे दही, पक्वान्न अथवा अन्य सामग्रीक विशद वर्णनसँ सिद्ध अछि जे हमरा लोकनिक सामान्य स्वभावक परिचायक अछि। स्वाभिमानक विषयमे तँ समस्त देशमे धारणा रहल अछि-"मैथिलाः स्वभावात् गुण गर्विणः भवन्ति"। शास्त्रज्ञ छी, व्यावहारिक छी तँ तकर गुणसँ गौरवान्वित सेहो छी। अकारण नहि।

मिथिलाक संस्कृतिमे 'लोक' एवं 'वेद' केँ समान महत्व देल गेल अछि। वैदिक विचारक संग-संग लोकाचारक महत्व समान रूपेँ रहल अछि। एतेक धरि जे कोनो पूर्व परिचितसँ भेट हम सब स्वतः पूछैत छी-लोक-वेदक हाल कह। लोक शब्द अत्यन्त व्यापक अर्थमे ग्रहीत रहल अछि-सामान्य जनक बोधक रहल अछि।

समस्त जनसमुदाय, जनसामान्य, समाजक वृहत वर्ग 'लोक' शब्दक अन्तर्गत सन्निहित रहल अर्थात् लोक शब्द समस्त समुदायक बोधक रहल अछि। तँ 'लोक-वेद'क अर्थ समाज ओ शास्त्र रूपमे प्रचलित-व्यवहृत रहल। लोक सामाजिकता सूचक रहल आ वेद आध्यात्मिक उन्नयनक जिज्ञासा सूचक। एहि एकमात्र सामान्य औपचारिकतामे भौतिक ओ आध्यात्मिक दुनू तत्वक सहज समावेश हमर सांस्कृतिक वैशिष्ट्यक परिचायक बनल अछि। चिन्तनक

स्तरीयताक द्योतक बनल अछि। हमर अस्मिताक विशेष बात इएह चिन्तनक उच्च स्तरीयताक थिक। मिथिला ओ मैथिल संस्कृतिक प्राचीनता, अनवरतता वा एकर सनातनता, कालक्रमानुसार परिवर्तनशीलता आदिकेँ अधुनातनताक दृष्टिसँ जखन देखैत छी तँ तुलनात्मक दृष्टिएँ गौरवबोध होएब स्वाभाविक। एमहर अर्थात् बीसम् शताब्दीक अन्त ओ एकैसम शताब्दीक प्रारंभिक दशकमे प्रत्येक क्षेत्रमे भूमण्डलीकरण, भौतिकवाद, बाजारवाद नव राजनीति-दार्शनिक अवधारणाक फलस्वरूप मिथिलांचलक जनजीवन ओ समाज-व्यवस्था सेहो अवश्य प्रभावित भेल अछि। विकासोन्मुख समाजक लेल ई सहज स्वाभाविक अछि।

आई समस्त संसारमे मिथिलाक लोक विभिन्न उद्देश्यसँ देशक विभिन्न क्षेत्रमे, विदेशोमे पसरल छथि-किछु अल्पकालीन वासी बनि तथा किछु ओही ठामक निवासी बनि गेल छथि।

एतबा होइतहुँ मिथिलावासी सर्वत्र अपन अस्मिताक अनुपालन ओ रक्षार्थ तत्पर छथि। भाषा ओ साहित्यक माध्यमे 'विद्यापति' प्रतीक-पुरुष रूपमे स्थापित भए गेल छथि। ओही नाम पर अपन सांस्कृतिक अस्मिताक रक्षार्थ लोक सक्रियतापूर्वक संलग्न अछि। छोटसँ छोट शहर अथवा पैघसँ पैघ नगरे नहि, इंगलैंड, अमरीका, रूस सहित आनो देशमे मैथिलीभाषी लोकनि विभिन्न आयोजनक माध्यमे एकत्रित भए अनुचिन्तन करैत छथि, जे स्तुत्य ओ श्लाघनीय अछि।

उदार भावना थिक सभ धर्मक प्रति श्रद्धापूर्ण आदरभाव। जाति, वर्ण, सम्प्रदायसँ निरपेक्ष भए समस्त समाज, राष्ट्र आ सम्पूर्ण मानव कल्याण भावनाक रक्षा हमर अस्मिताक पचियक हेबाक चाही।

वास्तवमे संस्कृति हृदयक वस्तु थिक। वाह्य व्यवहारसँ भिन्न वस्तु थिक। वाह्य व्यवहारमे उदारता ओ स्थानिकता राखब अपेक्षित नहि आवश्यको अछि। वस्त्रादि पहिरब सामयिक ओ स्थानिक अपेक्षा रखैत अछि। किन्तु अपन सांस्कृतिक अस्मिताक प्रति सचेत रहब आवश्यक अछि। ई बात कोनो कानून वा नियमसँ संभव नहि भए सकैछ। ई तँ स्व-नियमन द्वारा संभव भए सकैछ। हम स्वयं अपन अस्मिताक प्रति जागरूक रही। स्वविवेकक अनुशरण करैत आत्मसम्मानक भावसँ पूरित रही। स्वयं जागी, जागल रही ओ सभकेँ एहि जागृतिक परिधिमे लावी।

शब्दार्थ

तत्पश्चात-तकर बाद

दृष्टिगोचर-देखबा योग्य

कानन-वन, जंगल

तीरभुक्ति-मिथिलाक एक दोसर नाम

प्रश्न ओ अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

मिथिलाक प्राचीनता: वर्त्तमान अस्मिता निबन्धक लेखक छथि?

(क) डॉ0 नवीन चन्द्र मिश्र (ख) डॉ0 इन्द्रकान्त झा (ग) डॉ0 बासुकीनाथ झा (ग) डॉ0 लेखनाथ मिश्र

लघूत्तरीय प्रश्न-

) मिथिलाक कोनो दू प्राचीन विद्वानक नाम लिखू।

) गुप्तकालमे मिथिल कोन नामसँ प्रसिद्ध छल?

i) भारतीय दर्शनक कतेक शाखा अछि?

v) तत्वचिन्तामणिक लेखक के थिकाह?

लघूत्तरीय प्रश्न-

) भारतीय दर्शन भंडारकेँ के सभ भरलनि?

) चण्डेश्वर राज्य संचालनक विषयमे की सभ कहलनि?

ii) लोक गाथाक नायक के सभ होइत अछि?

v) मैथिलक की वैशिष्ट्य अछि?

v) हमर सभक परिचित कथीमे रहल अछि?

दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

) तिरहुतक उत्पत्तिक विश्लेषण करू।

i) मिथिलाक प्राचीनताक वर्णन करू।

iii) मिथिलाक प्राचीनता वर्त्तमान अस्मिताक अति संक्षेपमे विशेषता लिखू।

□□□

विभूति आनन्द

मूल नाम	-	विभूति चन्द्र झा
जन्म	-	4 अक्टूबर, 1955 ई0
जन्म स्थान	-	शिवनगर
वृत्ति	-	1. जिला स्कूल, मुंगेरमे मैथिली विषयक +2 व्याख्याता 2. रास नारायण महाविद्यालय, पण्डौल, जिला–मधुबनीमे मैथिली विभागाध्यक्ष। 3. सम्प्रति ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर मैथिली विभागमे कार्यरत।
कृति	-	प्रवेश (1979), खापड़ि महक थान (1989), काँठ (2002)–कथा-संग्रह। डेग (1977), उपक्रम (1984) पुनर्नवा होइत ओ छौड़ी (1992), नेहाइपर स्वप्न (1999)–कविता-संग्रह। झूमि रहल पाथर मन (1988), उठा रहल घोघ तिमिर (1981)–गीत-गजल संग्रह। गाम सुनगैत (1980), पराजित–अपराजित (1982)–उपन्यास। समय संकेत (1988), तिसिरदाइ हाली-हाली बरिसू (2005)–नाटक। श्री ललित आ हुनक कथा-यात्रा (1982), स्मरणक संग (2004), ललित (2004)–समीक्षा। मैथिल शहीद बैकुण्ठ शुक्ल, जीव विज्ञान–अनुवाद। एकर अतिरिक्त अनेको पत्र-पत्रिका एवं पुस्तकक यशस्वी सम्पादक रहल छथि।
पुरस्कार	-	'काठ' कथा-संग्रहपर साहित्य अकादेमी पुरस्कार (2006)।

□□□

आउ, हम बेटी-विमर्श करी

एहि पितृसत्तात्मक समाजमे बेटी, ओ चाहे बहीन रहलि हो वा पुतोहु, पत्नी रहलि हो वा आनहि कोनो सम्बंधक डोरसँ बन्हाएल रहलि हो, दोयम दर्जाक स्तर पर जीबैत रहलि अछि। ओकरा अपन होएबाक ने तऽ बोध भेलै, आ ने तेहन कोनो परिवेश भेटलै जे ओ अपन स्वतंत्र अस्तित्वकेँ निखारितए। समाजमे ओ सभ दिन दलित रूपमे जीबैत रहलि। ककरो बेटी भऽ कऽ तऽ ककरो पत्नी भऽ कऽ अपन भऽ कऽ जीवाक जेना ओकरा अधिकारे नहि देलकै ई समाज। जहिया-जहिया बेटीक जन्म भेलै, परिवारक चेहरा मलिन भेलै। खुशी हेरा गेलै। बेटी जखन पैघ भेलि तऽ बेटा जकाँ ओकरो एकटा नाम भेटलै। विवाहक बाद मुदा ओहि बेटीक नाम ओकरा नहिरेमे रहि गेलै। सासुरमे पुनः एकटा दोसर नाम भेटलै। मानि लियऽ जेना पुनर्जन्म भेल हो। जखन ओ बेटी आब पुतोहु बनि चुकल छलि, पहिल बेर माए बनलि तऽ फेर ओकर नाम बदलि गेलै-फल्लाँ आकि फल्लीक माए।.....कहबाक अर्थ ई जे बेटी जाति एहि समाजमे एही स्थितिमे जीबैत रहलि अछि, स्पष्ट भऽ कऽ ओकर नाम धरि स्थिर नहि रहि सकलै।

ई थिक हमर समाज, आ ताहि समाजमे बेटी, अर्थात् नारीक स्थिति। एकरा सभ दिनसँ एक समस्या बुझल-बाइत रहलै, जाहिमे प्रमुख रहलै वैवाहिक समस्या। अर्थात् बेटी माने समस्या, आ समस्या माने विवाह। आर दोसर समस्या भेबे नहि कएलै। भेबो कएलै तऽ सोचले नहि गेलै। बेटी एकमात्र संतानोत्पत्तिक कारक रहलि, आ तेँ विवाह। मैथिली साहित्यमे तेँ विवाह एक प्रमुख विषय रहल अछि। समस्याक ई एक तेहन जाल रहल, जकरा सँ मुक्त होएबाक कोनो ओर-छोर नहि भेटलै। ई समस्या अदौ कालसँ मात्र गाओल जाइत रहल। सोहरसँ लऽ कऽ समदाउन धरि।

विद्यापति कालमे सेहो ई समस्या छल। अनमेल विवाहक समस्या। विद्यापति तेँ राधा-कृष्ण, माने युवा-युवतीक रंग-रभसमे भेर अथवा पूजा-पाठमे निमग्न, जखन समाज दिस तकलनि तऽ व्यथित भऽ उठलाह। ओ पीड़िता बेटीक दर्द आ दाह केँ ओकरे स्वरमे कहलनि।

पिया मोर बालक, हम तरुनी गे, कोन तप चुकलहुँ, भेलहु जननी गे। ओ बेटी जखन अपन पति केँ कोरामे लऽ कऽ हाट-बाजार करऽ जाए तऽ लोक सभ ओकरा सँ ओकर संबंधक मादे पुछाहेरी करै छै। अन्ततः ओकरा कहऽ पड़ै जे ई नहि तऽ हमर देओर लगै छथि, नहि तऽ छोट भाए। ई तऽ हमर पूर्वक लिखल छल, ई हमर पतिदेव छथि।

मुदा विद्यापति एहि समस्याकेँ मात्र समस्या जकाँ नहि रखलनि। ओ तत्कालीन सामाजिक संरचनाक अनुकूल प्रत्यक्ष विरोध नहि कऽ कऽ, व्यंग्य-शैलीमे ओहो पीड़िताक कण्ठसँ कहलनि-

बाट रे बटोहिया कि तुहू मोर भाइ

हमरो समाद नैहर नेने जाइ

कहिहुन बाबा के किनता धेनु गाइ

दुधबा पिलाइ के पोसता जमाइ

तत्कालीन समाजक एहि वर्गक एक सीमा रहल होएतै, तँ अपन दु:स्थितिक विरोध एहि सँ आगू बढ़िकऽ नहि कऽ सकै छल। मुदा उक्त पाँतीमे जे पीड़ा छै, तकरा आइयो अकानल जा सकैए। ओहि बेटीक तामस अपन बाबा अर्थात् पितापर छलै, माए पर नहि। माए तऽ पीड़िता रहलै सभ दिन। गुम-सुम। घूर- धुआँ करैत। ओना एकरा विरोधक विद्यापति शैली सेहो कहल जा सकैए। तँ नारी मनोविज्ञानक प्रखर अध्येता महाकवि विद्यापति मात्र रंग-रभस आ पूजे-पाठमे लागल नहि छलाह। ओ समाज अध्ययन सेहो करै छलाह, आ कोनो ऊँच-नीचक विरोध करऽ सँ नहि चूकै छलाह।

मुदा एहि वर्गक ई समस्या, मिथिला-समाजक कपार पर चढ़ल, नचिते रहल। अपितु एना कही जे आरो भयावह होइत गेल। तकर कारणमे उएह पितृसत्तात्मक समाज, ओकर पुरुषवादी मानसिकता, मुखर रहलै। मातृसत्ता सेहो ताहि स्थितिमे स्वयं कँ सुरक्षित बुझैत, भोग्या बनलि, हँसैत-कनैत-गबैत जीबैत रहलि, अपन स्वभावक परम्पराकँ आगूक पीढ़ीकँ सौंपैत रहलि।

एही क्लीव परम्पराक प्रतीक आधुनिक कालमे भेली 'बुच्चीदाइ'। हरिमोहन झाक सर्वप्रशंसित चरित्र। अर्थात् लगभग पाँच-साढ़े पाँच सए वर्ष बाद धरि सेहो बेटी अपना कँ 'बुच्चीदाइ चुप्पे' धरि सीमित रखने छलीह।

हरिमोहन झा नारी-जागरण विषयक बहुत रास वस्तु अपन लेखनीक माध्यमे साहित्यमे अनलनि, मुदा समाजमे हुनका अधिसंख्य प्रणम्य देवता लोकनि सएह भेटलथिन। खट्टरकका भेटलथिन, तऽ विशुद्ध तार्किक रूपमे। तँ हुनका साहित्यमे बेटी- विकासकँ अपेक्षित स्वर नहि भेटि सकलै। 'तिरिदाइ' अपन भविष्यपर कनैत रहली। ग्रैजुएट पुतोहुकँ सेहो सामाजिक लांछना टा भेटलनि। तथापि हरिमोहन बाबू करोट फेरैत समयकँ अकानैत विमला देवी सन चरित्रकँ 'ग्रामसेविका'क माध्यमे स्थापित कएलनि। मुदा बुच्चीदाइ हुनका संग नहि छोड़लथिन।

हरिमोहन झाक समकालमे अएलाह वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'। अनमेल ओ बाल विवाह हिनको मथने छलनि। हिनकर बेटीक माएकँ कण्ठ फुटलनि। ओ ओकर बापकँ सोझे-सोझ पुछलथिन-

ई की कएल, उठाकऽ लऽ आनल

कमलक कोढ़ी ले ढेंग कोकनल

.....

जनमितहि मारि दितिअइ नोन चटाकऽ

कुहरए नहि पड़ितए घेट कटाकऽ

तामस तकर बाद माएक बेटी कँ सेहो उसकौलकै। ओहो तर्जनी देखौलक-

जो रे राक्षस, जो रे पुरुषक जाति!

तोरे मारलि हमरा सभ मरि रहलि छी

मुदा तुरंते ओ तामस, पुआरक आगि जकाँ मिझा गेलै, ओ हारि गेलि-

ककरा की कहबै, सुनत के आइ

फाटऽ हे धरती, समा हम जाइ

माने, उएह सीताक नियति! विरोध नहि कऽ कऽ अपन अस्तित्वकेँ माटिमे मिला लेलनि।

मुदा ई से अनमेल विवाहक बेटीक परिणति छल। जातिक खरीद-बिक्रीक झमेला छल। मुदा ओही समयक ल विवाहक विधवा बेटीक स्थिति किछु फराक छल। ओ अपेक्षाकृत बेसी चेतन, बेसी समर्थ भऽ गेल छलि। ओ ती फटबाक कामना नहि कऽ जीबैत रहि समाजक एहि क्रूर परम्परा पर चोट कएलक-

अगराही लगौ, बरू बज्र खसौ

एहेन जाति पर बरू धसना धसौ

भूकम्प हौक, बरु फटौक धरती

माँ मिथिला रहिकेय की करती

ई रहए यात्रीक यात्रीपन! बेटीक चेतनाकेँ प्रखरताक संग निखार देबाक अभिनव चेष्टा। वस्तुत: थल-समाजमे ओकर नाड़ीकेँ वैद्य बनिकऽ गहनताक संग टोबाक, गर्मीक नपबाक जमीनी प्रयास यात्रीये कएलनि। वतुरिया' तकर उत्तम उदाहरण अछि। यात्री जाहि अनमेल विवाहक 'बूढ़बर' कवितामे हारल विरोध केँ दरसौलनि, हि 'नवतुरिया' उपन्यासमे आबि ओकर सफल परिणतिकेँ साकार कएलनि। एहिमे नायिकाक विवाह एक बूढ़सँ नहि ऽ कऽ समवयसी युवक सँ भेल छल।

वस्तुत: बेटीक सोचमे बहुत तेजीसँ विकास भऽ रहल छलै। ओ 'दबल हाहाकार' नहि भऽ कऽ अपन मसिद्ध अधिकारकेँ बुझऽ लागल छलि, आ ताहि दिशामे दखल देब आरंभ सेहो कऽ देने छलि। नहूँ-नहूँ नवीन क्षाक हिसाबे पढ़ऽ-लिखऽ लागल छलि, स्कूल-कॉलेजक प्रति उत्सुकता बढ़ि रहल छलै।

तकर कारण सेहो छलैसमाजक पुरुष-पात स्थायी रोजी-रोटीक खोजमे, दरिद्रताक मारल, अपन गामघरसँ रएब शुरू कऽ देने छल। अयाची मिश्रक सोच बहुत कष्ट देबऽ लागल छलै। अपना बाड़ीक उपजा खाकऽ आब अधिक दिन नहि जीबि सकै छल। ओकर आवश्यकता, ओकर सोच अंग्रेजी शिक्षाक प्रभाव सँ विस्तार पाबि रहल लै। से, जखन ओ बहराए लागल, बेटीक प्रति दृष्टिकोणमे अंतर होबऽ लगलै। ओ दिन-दुनियाँ देखलक। पश्चात् खन सपरिवार शहरजीबी होएब शुरू कएलक तऽ परिवेशगत प्रभाव, वैचारिक परिवर्तन अनबामे सहयोग कएलकै। ा संग बेटीकेँ सेहो स्कूल पठबऽ लागल। बेटी पढ़ऽ लागलि। बेटीक पढ़ब आ कर्मक्षेत्र दिस बढ़बाक बसात क्रमश:

गामघर दिस सेहो सिहकले गेलै।...

ई परिवर्त्तन हठात् नहि भेलै। जखन देश आजाद भेल, लोक कल्याणकारी सोच, व्यवस्थाक नव क्रेन्द्रबिन्दु बनल, तऽ शिक्षाक प्रति आम रुझान बढ़लै। आ से दुनू स्तर पर। सरकार आ जनता दुनू एहि दिशामे नव उत्साह आ नव उमंगक संग गतिशील भेल।

एहि सभ तरहक परिवर्त्तनक हमर समकालीन मैथिली साहित्य, साक्षी रहल अछि। साक्षी रहि एहि परिवर्तित सोचकेँ आजुक सोच कहि स्वागत कएलक अछि।

कारण, आइ बेटीक प्रति पुरान दृष्टिकोण बदलि रहल छै, बदलि गेल छै। आइ बेटी, बेटाक अपेक्षा बेसी नीक रिजल्ट अनैए। बेटी चहकैए। बेटी ईर्ष्या बनैए। बेटी दया नहि, स्वाभिमान बनि गेल अछि। बेटी घुरखुरक भीतरक नोर नहि, भोर जकाँ धमकऽ लागल अछि। ओ आइ एमबीबीएस डाक्टर सँ लऽ कऽ आइआइटी इंजीनियर बनऽ लागलि अछि। प्रोफेसर , विभागाध्यक्ष सँ लऽ कऽ कुलपति बनि रहल अछि बेटी। बेटी आइ ओहन सभ किछु करऽ लागल अछि, जे काल्हि धरि बेटा लेल निहुँछल रहैत छलै। आइ मिथिलाक बेटी न्यायाधीशक कुर्सी पर बैसैत, सांसद-विधायक भऽ कऽ मंत्री बनैत तथा आइएएस-आइपीएस भऽ देशक व्यवस्थाकेँ व्यवस्थित करऽ मे लागलि अछि। हमर बेटी तऽ पर्वतारोही भऽ हिमालयक शिखर छुबि आयलि अछि।

ई जे परिवर्त्तन भऽ रहल अछि, भेल अछि ओ बेटीकेँ अपन जीवन जीबाक दृष्टिकोणमे सेहो परिवर्त्तन आनि देलक अछि। ओ अपन केरयिरकेँ प्रमुखता दैत विवाह-संस्थाकेँ सेहो गौण बुझऽ लागलि। एक टटका प्रकाशित कथामे ओ अपन पिताकेँ स्पष्टत: कहैत अछि 'पापा हमर चिन्ता नइ करू। हमरा लेल विवाहसँ अधिक महत्वपूर्ण हमर केरियर अछि। हमर केरियर संग मजाक बन्द करू। ई हक हम अहाँकेँ नइ दै छी...।'

विवाह संस्था पर प्रहार कोनो नव नहि अछि। पछिले सदीमे ई हवा सिहकि उठल छल। वैचारिकता करोट फेरि रहल छल। 'पृथ्वीपुत्र'क सहनायिका बिजली, अपन मोनक सोझ-साझ आ स्वाभाविक कथामे मुक्तप्रेमक महादेवी बनैत, संगहि अवचेतनक स्तर पर सही, विवाह संस्थापर प्रहार करैत कहैए-'ओह कूचि बिजली पाछाँ घुसुकि गेलि जेबर पहिरबाक नाम पर। फेर गंभीर भेलि किछु काल धरि विचारइत रहलि। फेर शान्त स्वरेँ बाजलि-हम तोरा संगे ने रहबऽ, ने वियाहे करबऽ। हम नियम कएने छी। बिअहुआ के तेयागि आब ई तोहर सुइत-पाइत हमरा छजत? हम एहिना तोरा लग अबइत रहबह। चोराकऽ-नुकाकऽ। साँझखन, रातिमे, बेरिआमे।'

हम अपन कथनकेँ आर अधिक उदाहरण दऽ कऽ सिद्ध करबाक अपेक्षा मूल गप ई कहऽ चाहै छी जे आइ बेटी वैचारिक स्तर पर बहुत दृढ़ भऽ चुकल अछि। जीवनक विभिन्न क्षेत्रमे ओकर महती भूमिकाकेँ अनदेखी नहि कएल जा सकैए। ओकरा रूढ़ रूपमे भोग्या बनाकऽ रखबाक सपना देखब अपराध छी, अपन सोचकेँ समय सँ पाछू चलबा लेल प्रेरित करब थिक। काल्हि धरि जे बेटी एक सफल गृहिणी रूपमे रूढ़ छलि, आइ ओकर संग-संग सफल कामकाजी महिला-रूपमे प्रशंसित अछि। ओ घर-बाहर दुनू केँ बहुत नीक ढंगे सम्हारैत आगू बढ़ि रहल अछि। तकरे

रिणाम थिक जे आइ समाजमे बुच्चीदाइ, सघन अभियान चलौलाक उपरान्तो नहि भेटतीह। हुनक परम्परा विलुप्त अछि। बुच्चीदाइक संतति नव संस्कारसँ युक्त होरादाइक रूपमे ख्यात भऽ गेलि छथि। ओ विकासक अनेक सीढ़ीकेँ र करैत व्यापार-प्रबंधनमे लागि गेलीह अछि। एतऽ स्मरणीय जे आजुक सर्वाधिक प्रिय आ जरूरी विषय सेहो सएह छि-विजनेस मैनेजमेंट! अस्तु।

बेटीक मादे अपन समाजमे एक बहुत पुरान लोकोक्ति सुनल जाइ छल-बेटी ताड़ जकाँ बढ़ि गेलए। ई ताड़ काँ बढ़ब पिताक लेल चिन्ताक विषय होइत छल। चिन्ता एहि लेल जे आब ओकर विवाह करबऽ पड़त। आइ ओहि ोकोक्तिक अर्थ बदलि गेल अछि। बेटी ठीके ताड़ जकाँ बढ़ि रहलए! अर्थात् ओकरामे अपन होएबाक बोध जन्म तऽ लकैए। ओ अहुसँ तेजीसँ आत्मनिर्भरता दिस डेग उसाहि रहलए। तेँ जे समाज काल्हि धरि बेटीकेँ बलाय मानि ोकरा संग अपनो हकन्न कनबा लेल अभिशप्त छल, आइ से बेटी 'आय'क एक प्रमुख कारण बनि, घर-परिवारसँ ऽ कऽ देशक विकास धरिमे अपन एक महती भूमिकाकेँ रेखांकित कऽ रहलि अछि। एहना स्थितिमे 'मनुस्मृति' मे ाएल ओ गार्हस्थ्य-सम्बंधी प्रगतिशील श्लोक वस्तुतः एहि समकाल लेल संदर्भित भऽ उठैत अछि, अर्थात् 'यत्र र्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः'।

ब्दार्थ

तृसत्तात्मक समाज-पुरुष प्रधान समाज

र-रस्सी

यम दर्जा-दोसर (निम्न) दर्जा

ध-ज्ञान, जनतब, जानकारी

रिवेश-वातवरण, चारूकातक आवो हवा

स्तित्व-सत्ता

ोहु-पुत्रक पत्नी

ानोत्पतिक कारक-(सन्तान-पुत्र पुत्री+उत्पत्ति-जन्म कारक=कारण/साधन) सन्तान उत्पन्न करबाक साधन।

हर-जन्मकालमे गाओल जाइवला गीत

दाउन-बेटीक बिदाइ कालमे गाओल जाइवला गीत

मेल-बेमेल

थित-दुखित

नी-नवयुवती, नवयौवना

नी-माय

संरचना–बनावटि

जमाइ–बेटीक पति

दु:स्थिति–खराब स्थिति

अकानल–अनुमानँ लगाएब

तामस–क्रोध

भोग्या–भोग करबा जोग वस्तु

सोंपैत–समर्पित करैत

क्लीव–नपुंसक

प्रतीक–चिह्न

अधिसंख्य–बेसी संख्या

प्रणम्य देवता–यथा स्थिति बादी

लांछना–कलंक/दोष

करोट फेरैत–करबट बदलैत

विधवा–जकर पति मरि गेल हो, ओ स्त्री

सपरिवार–परिवारक संग

साक्षी–गवाही

पर्वतारोही–पहाड़ पर चढ़निहार

विलुप्त–समाप्त

लोकोक्ति–लोकक कहब

प्रश्न ओ अभ्यास

1. **निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर एक शब्दमे दिअ–**

(i) दोयम दर्जाक स्तर पर के जीवैत रहलि अछि?

(ii) ककर जन्मसँ परिवारक चेहरा मलिन भेलैए?

(iii) बेटी एकमात्र ककर कारक रहलि अछि?

(iv) जखन समाज दिस तकलनि तऽ के व्यथित भऽ उठलाह?

(v) हरिमोहन झाकेँ समाजमे अधिसंख्य कोन लोकनि भेटलथिन?

2. खाली स्थानकेँ कोष्ठकक उचित शब्दसँ भरू-

(i) आधुनिक कालमे 'बुच्चीदाइ.....परम्पराक प्रतीक भेली।

(ii) विमला देवी सन चरित्रकेँ.....माध्यमे स्थापित कयलनि।

(iii) हरिमोहन झाक समकालमे अयलाह.....।

(iv) समाजक कुटिलताकेँ देखि अपन अस्तित्वकेँ माटिमे मिलायब.....नियति अछि।

(v) यात्रीजीक एकटा उपन्यासक नाम अछि.....।

(ग्रामसेविकाक, क्लीव, सीताक, नवतुरिया, यात्री)

3. स्तम्भ 'क' क मिलान स्तम्भ 'ख' उचित शब्दसँ करू

(क)	हरिमोहन झा	(i)	बिजली
(ख)	यात्री	(ii)	बुच्चीदाइ
(ग)	सोहर	(iii)	मातृसत्तात्मक
(घ)	पितृसत्तात्मक	(iv)	समदाउन
(ङ)	पृथ्वीपुत्र	(v)	बूढ़वर

4. लघूत्तरीय प्रश्न-

(i) एहि समाजमे स्त्री कोन-कोन रूपमे विद्यमान अछि?

(ii) विद्यापति समाज दिस ताकि व्यथित किएक भऽ गेलाह?

(iii) विद्यापति बेमेल विवाहक विरोध कोन शैलीमे कयलनि?

(iv) आधुनिक कालमे बुच्चीदाइ कोन परम्पराक प्रतीक भेली?

(v) आइ बेटीक प्रति पुरान दृष्टिकोण बदलि रहल छै कोना?

5. सही कथनक समक्ष (✓) चिह्न आ गलक कथनक समक्ष (x) चिह्न लगाउ-

(i) आइ बेटी वैचारिक स्तर पर बहुत दृढ़ भऽ चुकल अछि।

(ii) यात्री स्त्री समाजक गहनताकेँ बुझबाक जमीनी प्रयास कयलनि।

(iii) विद्यापति मात्र युवा युवतीक रंग रभसमे घेर छलाह।

(iv) स्त्री जातिक नाम स्थिर रहैत अछि।

(v) खट्टरकका विशुद्ध तार्किक छलाह।

6. दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

(i) बेटीक जन्म भेला पर परिवारक चेहरा मलिन किएक भऽ जाइत छलै?

(ii) समाजमे स्त्री जाति दु:स्थिति विरोध कोना कयलनि अछि?

(iii) हरिमोहन झाक साहित्यमे नारी जागरणक चित्रणक उल्लेख करू।

(iv) यात्री जी अनमेल विवाहक विरोध कोना कयलनि अछि?

(v) आइ बेटीक प्रति सोचमे समाजक दृष्टिकोणमे तेजीसँ परिवर्तन भऽ रहल अछि। कोना?

(vi) आइ कोनो एहन कार्यक्षेत्र नहि अछि जाहिमे नारीक उपस्थिति नहि अछि। एकरा विस्तारसँ वर्णन करू।

(vii) आजुक सर्वाधिक प्रिय विषय की थीक आ किएक?

योग्यता विस्तार

1. विद्यापतिक नारी जागरणसँ सम्बन्धित रचनाक संकलन शिक्षकक सहयोगसँ करू।

2. यात्री जीक 'बूढ़वर' कविता आ 'नवतुरिया' उपन्यासकेँ विद्यालय पुस्तकालयसँ उपलब्ध कऽ अध्ययन करू।

3. हरिमोहन झाक 'बुच्चीदाइ', खट्टरकका, तिरिलाइ आ ग्रेजुएट पुतोहुक सम्बन्धमे अपना अध्यापकसँ विस्तृत जानकारी प्राप्त करू।

4. समकालीन पत्र पत्रिकासँ नारी जागरणक कोनो दूटा कथा अथवा कविताक संकलन करू।

Abdiel Solutions
Empowering Technologies